अप्रैल 2002
Rs. 10/-
चन्दामामा

विशेष आकर्षण

सम्पुट - १०६ अप्रैल - २००२ सञ्चिका - ४

राजा का वानप्रस्थ १९

राजकुमारी जूही ३८

माया सरोवर ११

मानव धर्म ५१

अन्तरङ्गम्

SUBSCRIPTION

For USA and Canada
Single copy $2
Annual subscription $20
Remittances in favour of
Chandmama India Ltd.
to
Subscription Division
CHANDAMAMA INDIA LIMITED
No. 82, Defence Officers Colony
Ekkatuthangal, Chennai - 600 097
E-mail : subscription@chandamama.org

शुल्क

सभी देशों में एयर मेल द्वारा
बारह अंक ९०० रुपये
भारत में बुक पोस्ट द्वारा १२० रुपये
अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट या
मनी-ऑर्डर द्वारा
'चंदामामा इंडिया लिमिटेड'
के नाम भेजें।

HEY PEOPLE! TELL US HOW CLOSE YOU'RE TO POPEYE AND YOU COULD WIN A POPEYE WATCH FROM DASH!

Put your knowledge on Popeye to test by ticking the right answers to the following questions and you could win an exciting Dash! watch.

1. What does Popeye do for a living? He's a
   a. Sailorman ☐ b. Tailorman ☐
   c. Cobblerman ☐

2. What's Popeye's source of strength?
   a. Roast Beef ☐ b. Hotdogs ☐
   c. Spinach ☐

3. What's Popeye's girlfriend's name?
   a. Olive Oyl ☐ b. Coconut Oyl ☐
   c. Sunflower Oyl ☐

Now dash this contest form to:
The Dash! Chandamama Contest,
Titan Industries Ltd, Airport Road,
Bangalore-560 017.

My name is: ____________________
I am a Boy ☐ Girl ☐. I am ______ years old
My address is: ____________________
____
Tel: ____________________
I read Chandamama in English ☐ Hindi ☐
Others ☐ (Please specify) ____________

Rules and regulations:
1. Judges decision is final and binding.
2. Incomplete forms will not be considered.
3. Prizes are not exchangeable in lieu of cash.
4. All entries should reach us by 15th May 2002.

Rs. 295 onwards.

Wow watches from Titan

'हीरोज़ ऑफ इंडिया' प्रश्नोत्तरी में अपनी प्रविष्टि भेजें और आश्चर्यजनक पुरस्कार जीतें।

भारत के नायक-७

भारत में शास्त्रीय संगीत की समृद्ध परम्परा रही है। यहाँ कुछ हमारे संगीत-नायकों के विवरण हैं। आप कितनों को पहचान सकते हैं?

तीन सर्वशुद्ध प्रविष्टियों पर पुरस्कार में साइकिलें दी जायेंगी।

1. कर्नाटक संगीत त्रयी में से एक ने २४,००० गीतों की रचना की। उनकी समाधि कावेरी नदी के तट पर तीरुवैयारु में है। उनका नाम क्या है?

---

2. इस जनश्रुत तबला के जादूगर ने तबला वादन में अपना एक विशिष्ट स्थान बना लिया है। उसका बेटा जाकिर हुसैन भी उसी के समान विख्यात तबला वादक है। वह कौन है?

---

3. यह प्रसिद्ध संगीतज्ञ सम्राट अकबर के दरबार का रत्न था। जब वह दीपक राग गाता था तो दीपक स्वयं जल जाते थे। क्या उसका नाम जानते हो?

---

4. वह शहनाई वादन का अद्वितीय कलाकार है। विगत वर्ष उसे 'भारत रत्न' से अलंकृत किया गया। हम किसके बारे में बात कर रहे हैं?

---

5. वह एक धनी व्यक्ति था, जिसका नाम था श्रीनिवास नाइक। इसने बाद में संसार का त्याग कर दिया। उसने कर्नाटक संगीत की आधार शिला रखी। क्या उसका नाम बता सकते हो?

प्रत्येक प्रश्न के नीचे दिये गये स्थान को स्पष्ट अक्षरों में भरें। इन पाँचों में से आपका प्रिय आदर्श नायक कौन है? और क्यों? दस शब्दों में पूरा करें

मेरा प्रिय आधुनिक नायक ....है,

क्योंकि ....

प्रतियोगी का नाम: ....

उम्र: .... कक्षा: ....

पूरा पता: ....

....

पिन: .... फोन: ....

प्रतियोगी के हस्ताक्षर: ....

अभिभावक के हस्ताक्षर:....................

इस पृष्ठ को काटकर निम्नलिखित पते पर ५ मई से पूर्व भेज दें-

हीरोज़ ऑफ इंडिया प्रश्नोत्तरी-७
चन्दामामा इन्डिया लि.
नं.८२, डिफेंस ऑफिसर्स कॉलोनी
ईकाडुथांगल, चेन्नई-६०० ०९७.

निर्देश :-

१. यह प्रतियोगिता ८ से १४ वर्ष की आयु तक के बच्चों के लिए है।
२. सभी भाषाओं के संस्करणों से इस प्रतियोगिता के लिए तीन विजेता चुने जायेंगे। विजेताओं को समुचित आकार की साइकिल दी जायेगी। यदि सर्वशुद्ध प्रविष्टियाँ अधिक हुई तो विजेता का चुनाव 'मेरा प्रिय नायक' के सर्वश्रेष्ठ विवरण पर किया जायेगा।
३. निर्णायकों का निर्णय अंतिम होगा।
४. इस संबंध में कोई पत्राचार नहीं किया जायेगा।
५. विजेताओं को डाक द्वारा सूचित किया जायेगा।

पुरस्कार देनेवाले हैं

संस्थापक
बी. नागिरेड्डी और चक्रपाणि

धरती दिवस के लिए एक विचार

हम सभी धरती पर रहते हैं और इसके उपहारों का लाभ उठाते हैं - इसकी मृदा, भूमिगत वैभव, पौधे, जल जो इसी का अंश है, पशु-पक्षी जो हमारे साथ-साथ रहते हैं। हम इन सबसे तभी तक आनन्द लेते हैं जब तक हम जीवित रहते हैं। इसका अर्थ यह है कि हम धरती पर मात्र किरायेदार हैं।

किन्तु हमारा आचरण ऐसा होता है मानों हम इसके परम प्रभु हैं और हम धरती के साथ जो चाहें कर सकते हैं। हम यह नहीं महसूस करते कि हम जिसका उपभोग करते हैं, उसे दूसरों के साथ उचित ढंग से मिल बाँटकर करना चाहिए। जो भी हो, मनुष्य की लोभ वृत्ति के परिणामस्वरूप धरती सदा ही क्षतिग्रस्त और अपवित्र हुई है। यदि लोग धरती को नष्ट करना आरम्भ करने लगें तो इसकी सम्पत्ति खाली हो जायेगी और जो इसका उपभोग करने के हकदार हैं वे केवल कष्ट झेलेंगे।

धरती को नवीनतम भय कीटाणु आयुधों से है, जिनके द्वारा मनुष्य न केवल अपने विरोधियों को बल्कि बनस्पति व पशु-पक्षी सहित अन्य प्राणियों को भी नष्ट कर देते हैं। सारा आघात धरती को ही सहना पड़ता है। मिट्टी, पानी और पर्यावरण सभी प्रदूषित हो जाते हैं। जीवन में गतिरोध आ जाता है।

लाखों वर्षों से मनुष्यों की पीढ़ियाँ दर पीढ़ियाँ धरती पर रहती आ रही हैं।आज कई जीव-जंतुओं की जातियाँ विलुप्त हो गई हैं। कई बिनाश के कगार पर हैं।

अब आनेवाली पीढ़ियों के लिए 'धरती को बचाओ' कहने का समय आ गया है। आयें, हम लोग प्रतिज्ञा करें कि अब धरती माँ को कोई क्षति न होने देंगे। यह बच्चों का हम पर ऋण है।

सम्पादक : *विश्वम*
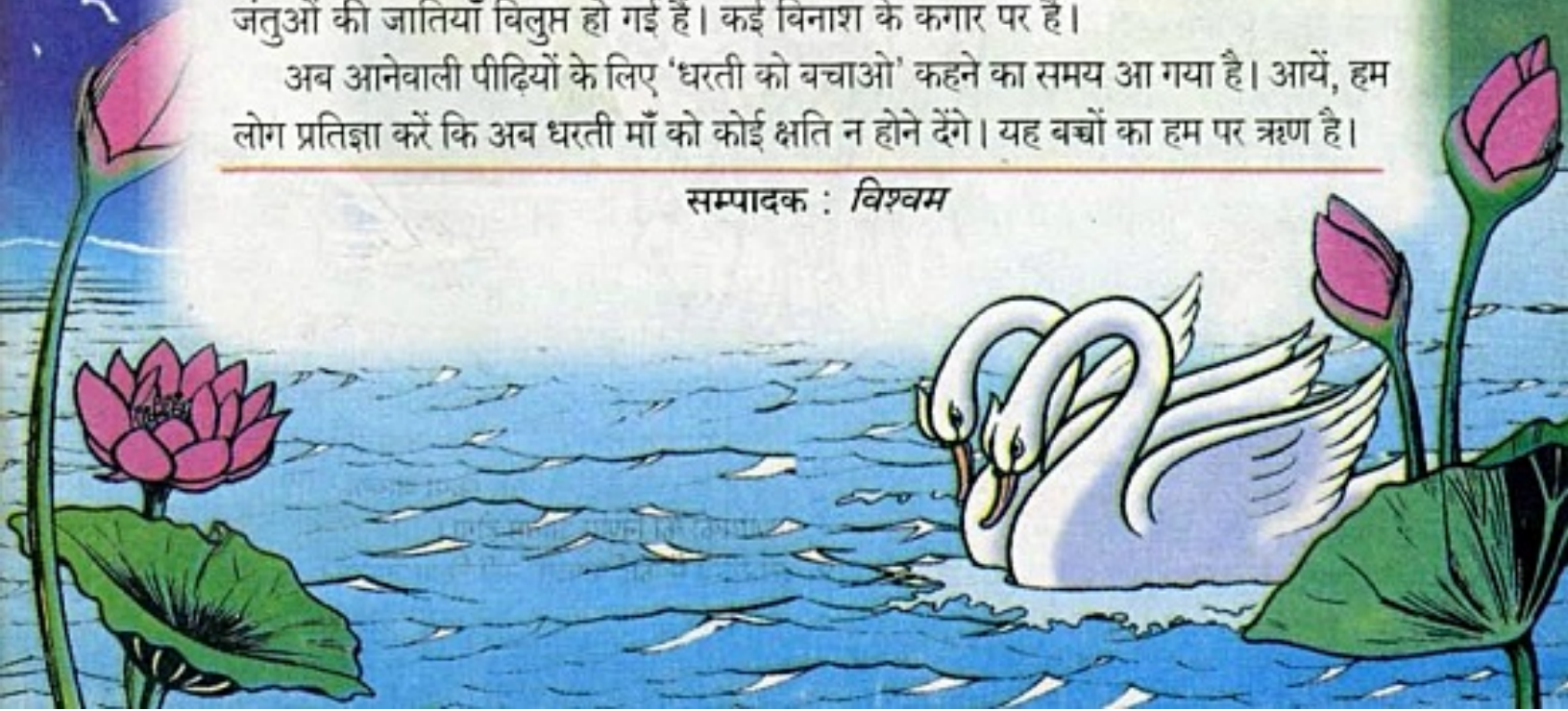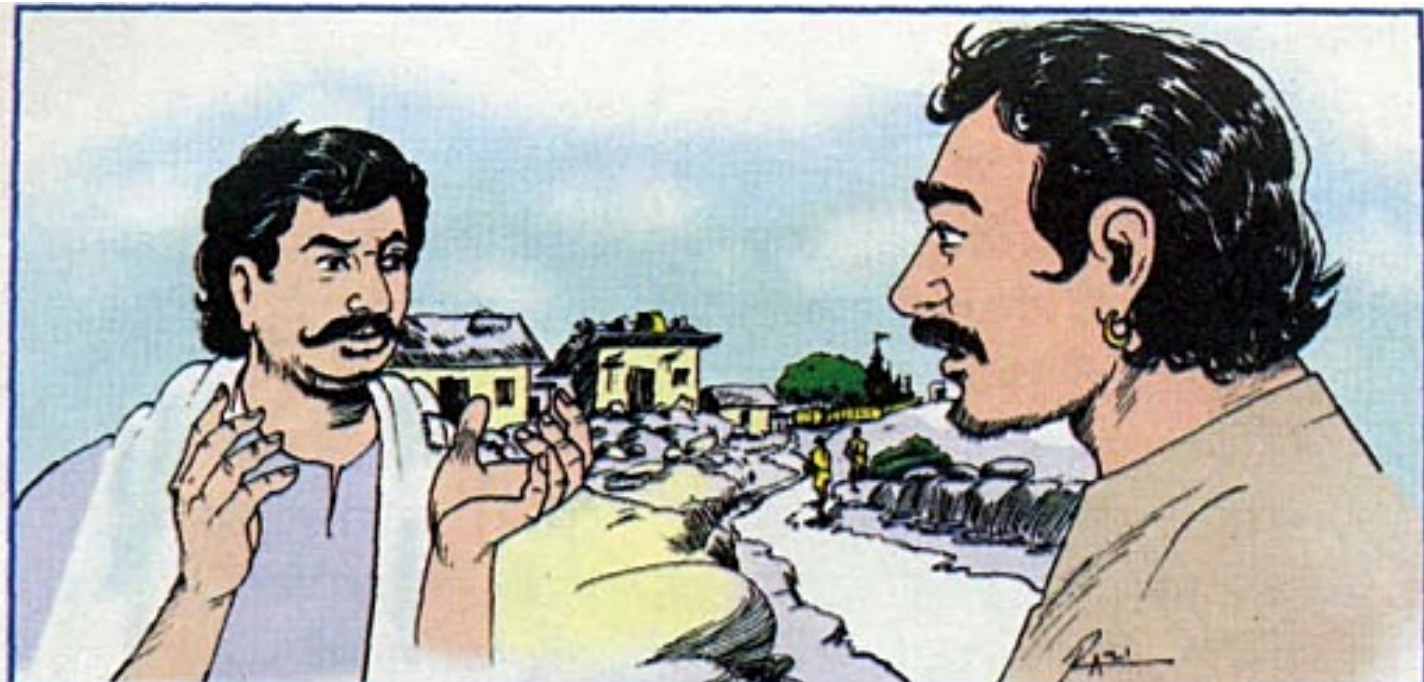
रुलानेवाला

दूसरों में आशाएँ जगाना और उन्हें रुलाना विकार की आदत थी। इससे वह बहुत खुश होता था। एक बार जब वह गली से गुज़र रहा था तब एक भिखारी ने हाथ फैलाते हुए कहा, ''महाराज, भूखा हूँ। दो दिनों से कुछ भी नहीं खाया। एक रुपया दीजिए। पेट भर लूँगा।''

विकार ने उसे नख से शिख तक देखा और कहा, ''तुमने मुझे महाराज कहकर संबोधित किया। पर मुझे तो तुम महाराज लगते हो। तुम्हारे चेहरे से वह आभा टपक रही है। सुनो, मैं जो कहूँगा, यदि वही करोगे तो तेरी ग़रीबी दूर हो जायेगी। तुम्हें भूखा रहना नहीं पड़ेगा। किसी के सामने हाथ फैलाने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। मेरे साथ चलोगे?''

भिखारी उसके पीछे-पीछे गया। विकार सीधे उसे अपने घर ले गया और उसे नये कपड़े पहनाये। फिर उसे लेकर एक घर गया और उस घर के मालिक से कहने लगा, ''बहुरूपिया बनकर महाराज स्वयं यहाँ आये हैं। वे तुम लोगों के दुख-दर्द जानने आये हैं।''

घरवाले सचमुच तक़लीफ़ों में डूबे हुए थे। मौक़ा पाते ही वे अपनी तक़लीफ़ें लगातार बताये जा रहे थे। विकार ने कहा, ''कल सबेरे गाँव के बाहर की उजड़ी सराय में आ जाना। महाराज आपको जितना धन चाहिए, स्वयं देंगे।''

बाद विकार भिखारी को एक और घर में ले गया। घर के मालिक को सैनिकों ने बिना किसी कारण के जेल में बंद कर रखा था और छुड़ाने के लिए एक सौ अशर्फ़ियाँ रिश्वत में माँग रहे थे।

विकार ने कहा, ''आप सब लोग कल सबेरे

- अभिषेक पुरी -

गाँव के बाहर की सराय में आ जाना। महाराज आपकी समस्या का निपटारा करेंगे।''

उसी गाँव में एक कवि था, जो अपनी कविता राजा के दरबार में सुनाने के लिए अति उत्सुक था। एक बुढ़िया अपनी ही उम्र की राजमाता को देखना चाहती थी। ऐसे कितने ही लोग उस गाँव में थे। विकार उन सबसे मिला। विकार ने उन सबको सराय में सबेरे-सबेरे आने को कहा।

यों शाम हो गयी। विकार भिखारी को अपने घर ले गया। उससे अपने कपड़े वापस ले लिये और कहा, ''जाकर भीख माँग लो।''

''कल तुम गाँव के बाहर की उजड़ी सराय में सबेरे-सबेरे आ जाना। फिर देखना, वहाँ क्या-क्या होता है। मज़ा आ जायेगा। हँस-हँसकर लोट-पोट हो जाओगे।'' विकार ने कहा।

दूसरे दिन सबेरे विकार सराय में गया तो वह चकित रह गया। महाराज स्वयं वहाँ आसीन थे। पिछले दिन विकार ने जिन-जिन से वादा किया, उन सबको उन्होंने निभाया।

तब जाकर विकार की समझ में आया कि वह भिखारी कोई और नहीं, स्वयं महाराज हैं। वह तुरंत महाराज के पैरों पर गिर पड़ा और माफ़ी माँगते हुए कहने लगा, ''प्रभु, मेरी ही वजह से गाँव के कितने ही लोगों का भला हुआ है। मुझपर भी कृपा कीजिए।''

''ठीक है। आज से तुम क़ैदी बनकर गाँव के बीचों बीचवाले मिट्टी की दीवारोंवाले घर में रहोगे। गाँव में कोई समस्या उठ खड़ी हो जाए तो तुमसे कहा जायेगा और तुम्हारे द्वारा उस समस्या का निपटारा होगा। पर याद रखना, तुम हमेशा के लिए क़ैदी ही बनकर रहोगे।''

''महाराज, आप मुझे यह कैसी सज़ा दे रहे हैं?'' विकार ने दीन स्वर में कहा।

''मैं कर भी क्या सकता हूँ। तुम जैसे लोगों को रुलाने में मुझे मज़ा आता है।'' महाराज ने हँसते हुए कहा।
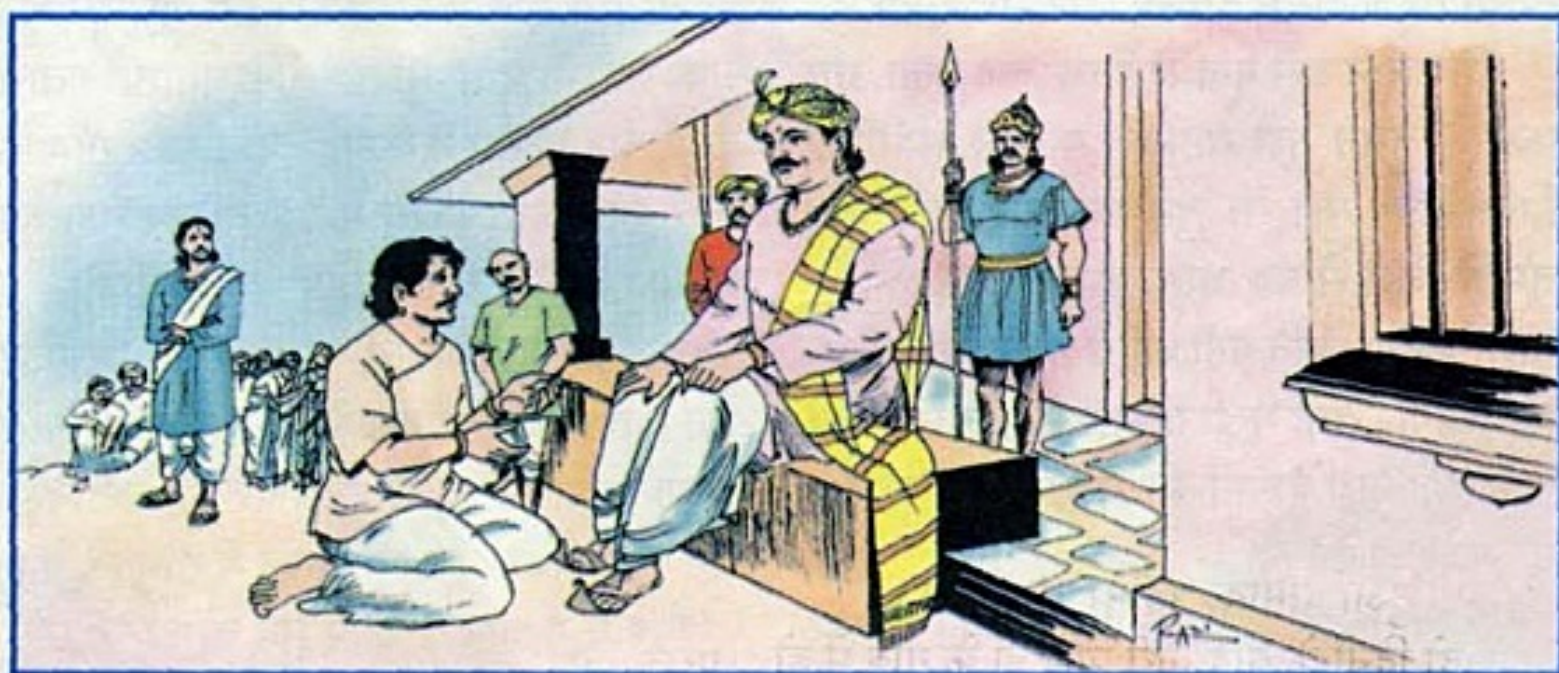
माया सरोवर

3

(सेनाध्यक्ष के पुत्र मंगलवर्मा को जयशील ने बाघों से बचाया। कनकाक्ष राजा ने उसकी प्रशंसा की और मंत्री की सलाह पर उसे अपने आस्थान में नौकरी भी दी। मंत्री जब राज्य के कार्यों के संबंध में विवरण दे रहे थे, तब एक सैनिक एक टूटी तलवार और मोतियों का एक हार लेकर आया।)

सैनिक की लायी हुई टूटी तलवार व मोतियों का हार देखकर कनकाक्ष राजा और मंत्री धर्ममित्र आश्चर्य में डूब गये। मंत्री ने मोतियों के हार को ध्यान से देखा और कहा, ''महाराज, यह हार कहीं युवरानी का तो नहीं है? और यह टूटी तलवार युवराज की तो नहीं है?''

राजा ने भी उन्हें ध्यान से देखा और कहा, ''अगर बताया नहीं गया होता कि ये दोनों उस वृक्ष के पास मिले हैं, जहाँ युवराज व युवरानी ग़ायब हुए थे तो मुझे भी इनके बारे में संदेह नहीं होता।''

''हम अभी युवरानी की मुख्य सहेली मल्लिका को बुलवाते हैं। शायद वह तलवार के बारे में बता न पाये पर कम से कम मोतियों के हार के बारे में अवश्य बता पायेगी।'' मंत्री धर्ममित्र ने कहा।

राजा का आदेश पाते ही एक सेवक मल्लिका को वहाँ ले आया। वह अपनी युवरानी के खो जाने पर अत्यंत दुखी थी। राजा ने यह नहीं बताया कि मोतियों का हार कहाँ मिला। हार उसे देते हुए

मंत्री ने मल्लिका से पूछा, ''बेटी, ऐसे मूल्यवान हार कितनी ही संपन्न स्त्रियाँ पहना करती हैं। तब तुम कैसे विश्वास के साथ कह सकती हो कि यह हार युवरानी का ही है।''

मल्लिका उस हार के दो मोतियों को दिखाती हुई बोली, ''चिरे हुए इन दो मोतियों को देखिए। एक बार युवरानी मुझपर नाराज़ हो गई और यह हार मुझपर फेंका। निशाना चूक गया और वह हार पेड़ से जा टकराया। तब ये दोनों मोती थोड़ा चिर गये।'' मल्लिका की बातों से यह विश्वास पक्का हो गया कि वह हार युवरानी कांचनमाला का ही है। अब इसमें भी संदेह नहीं रह गया कि वह टूटी तलवार युवराज की ही है।

उससे पूछा, ''अंतःपुर की किसी स्त्री ने इसे कहीं खो दिया। इसे ले जाओ और जिसका यह हार है, उसे दे दो।''

मल्लिका उस हार के मोतियों को ध्यान से देखती रही और एक जगह पर अचानक रुककर बोली, ''महाराज, यह हार युवरानी का है। जब हम जंगल में विहार करने गयी थीं तब उन्होंने इसे पहन रखा था।''

मल्लिका ने जब इसकी पुष्टि की कि यह हार युवरानी का ही है, महाराज का मन दुख से भर गया। वह मल्लिका से कुछ और पूछना भी चाहता था, पर पूछ नहीं पाया। उसका गला भर आया, उसकी आँखों में आँसू आ गये और वह सिर झुकाकर चुप रह गया।

राजा की इस दयनीय स्थिति को देखते ही

राजा ने मंत्री से कहा, ''जिस भील को ये मिले, वह अब कहाँ है?'' जो सेवक हार व तलवार ले आया था, उसने तुरंत कहा, ''उस भील की मानसिक स्थिति ठीक नहीं है। वह हमारे सवालों के जवाब देने की स्थिति में नहीं है। वह 'दो पैरों का मगरमच्छ' कहकर चिल्लाता जा रहा है।''

यह सुनते ही सिद्धसाधक चौंक पडा और कहने लगा, ''महाराज! यह सर्वविदित बात है कि महाकाल के परिवार के भूतगण कभी-कभी विचित्र वेषों में हमें दिखायी देते हैं। उस भील पर भूत हावी हो गया है। उसे हमें अपने अधीन करना होगा और उस भील से सच उगलवाना होगा। मुझे पूरा विश्वास है कि मैं उससे सारे विवरण जान पाऊँगा। मुझे और जयशील को जंगल में जाने की अनुमति दीजिए।''

राजा ने इसकी अनुमति दे दी। जयशील और सिद्धसाधक दोनों एक सेवक को साथ लेकर जंगल की ओर निकल पड़े और जटाओंवाले बरगद के वृक्ष के पास गये। वहाँ अभी भी कुछ भील थे। उन्होंने उस भील को रस्सियों से बाँध रखा था। उनमें से एक भूतवैद्य था। वह 'हाम फट, हाम फट' कहता हुआ चिल्ला रहा था और उस पर भस्म फेंकता जा रहा था।

जयशील, सिद्धसाधक व सेवक ने वहाँ पहुँचकर यह दृश्य देखा। सिद्धसाधक ने अपनी लाठी ऊपर उठायी और भूतवैद्य से रुक जाने के लिए कहा।

भूतवैद्य ने सिद्धसाधक को गुर्राते हुए देखा और उस पर पिल पड़ने ही वाला था कि राजसेवक ने उसे रोकते हुए कहा, ''ठहर जाओ। ये राजा के आस्थान के मांत्रिक हैं।''

सिद्धसाधक ने एक क़दम आगे बढ़ाकर कहा, ''अरे, तुम तो नीच ग्रहोपासक ठहरे। अपने इस मंत्रदंड से तुम्हें तिनका बना सकता हूँ, हवा में उड़ा सकता हूँ।''

भूतवैद्य भय के मारे थर-थर काँपने लगा। भयभीत भील युवक से सिद्धसाधक ने कहा, ''अरे भील भीम, देखो, दो पैरों के जिस मगर ने तुम्हें डरा दिया, उसकी छाती में इस शूर ने तलवार भोंक दी और मार डाला। अब तुम्हें डरने की कोई ज़रूरत नहीं। उठकर खड़े हो जाओ। जयशील ने जो तलवार मगर की छाती में भोंकी थी, वह यह है,'' कहते हुए साधक ने जयशील के म्यान से तलवार निकाली और दिखायी।

भील युवक तुरंत उठ खड़ा हुआ और कहने लगा, ''महोदय, आपने क्या दो पैरवाले मगर को मार डाला? उसकी लाश कहाँ है?''

सिद्धसाधक ने निधड़क कहा, ''मनुष्य मरता है तो शव बन जाता है। पर पिशाच जब मरता है तब क्या वह कहीं शव बनता है? अब बताओ, वह मोतियों का हार व टूटी तलवार तुम्हें कहाँ मिली?''

भील ने अपना गला साफ़ करते हुए कहा, ''महोदय, मैं जब शिकार करने बस्ती से निकला तब बरगद के उस वृक्ष की टहनियों पर एक जंगली मुर्गा बांग दे रहा था। मैंने उस पर बाण चलाया। वह जाकर उसके पंख में फंस गया। मुर्गा उड़ नहीं पाया और वह एक झाड़ी में गिर

गया।'' यह कहते हुए वह सिद्धसाधक और जयशील को एक घनी झाड़ी के पास ले गया। और बोला ''महोदय, इसी झाड़ी में मुझे मोतियों का हार व टूटी तलवार मिली।''

भील युवक की बात पूरी भी नहीं हुई कि सिद्धसाधक ने झुककर झाड़ी में देखा और छलांग मारते हुए कहने लगा, ''जयशील, महारण्य के बीच की इस काँटेदार झाड़ी में एक प्राचीन तालपत्र ग्रंथ है। जय महाकाली !'' कहते हुए उसने झाड़ी में से एक तालपत्र ग्रंथ निकाला।

उस तालपत्र ग्रंथ को देखते ही सिद्धसाधक उत्साहित हो गया और उसके चेहरे पर अजीब रौनक़ छा गयी। वह एक-एक करके ग्रंथ के उन पत्रों को उलटने लगा और ध्यान से देखने लगा। वह उन्हें देखने में इतना तल्लीन हो गया कि वह यह भूल गया कि बगल में ही जयशील भी खड़ा है। उसकी इस विचित्र स्थिति को देखकर जयशील चकित रह गया। सिद्धसाधक फिर अपने ही आप कहने लगा, ''यह कहाँ की भाषा है, किस लोक के लोग यह भाषा बोलते हैं? ये पत्र ताल के बने नहीं हैं। काफी मोटे हैं। लगता है, कमल के पत्तों से काटे गये हैं।''

जयशील ने पत्रों को साधक से ले लिया और ध्यान से एक बार देख चुकने के बाद कहा, ''भील द्वारा बताये गये दो पैरों के उस मगरने इन्हें यहाँ खो दिया होगा।''

''हाँ, ऐसा ही हुआ होगा।'' यों कहते हुए भील युवक की ओर मुड़ते हुए साधक ने पूछा, ''दो पैरवाला वह मगर यहाँ आया ही क्यों था?''

''साहब, झाड़ी में जो जंगली मुर्गा गिर गया था, उसे बाहर खींचने मैं झाड़ी में झुका। इतने में पीछे से आवाज़ हुई। मैंने मुड़कर देखा तो देखा कि वहाँ मगर के आकार का एक भयंकर आकार खड़ा हुआ था। भय के मारे मैं चिल्ला पड़ा और बेहोश होकर जमीन पर गिर गया,'' भील युवक ने कहा।

फिर जयशील ने भील की पीठ को थपथपाते हुए पूछा, ''तुमने जिस जंगली मुर्गे को अपने बाण का निशाना बनाया, वह कहाँ है?'' भील कुछ बताने ही वाला था कि भूतवैद्य ने दाँत पीसते हुए कहा, ''पर्वतदेवी उसे उठाकर ले गयी होगी। सवेरे-सवेरे इसने मुर्गे को मारकर बड़ा अपराध किया।''

जयशील ने उस पर नाराज़ होते हुए

सिद्धसाधक से कहा, "लगता है, यहाँ सब बेवकूफ़ और निकम्मे इकट्ठे हुए हैं। हमें कम से कम इन पर्वतों में, इन घाटियों में एक हफ़्ते तक घूमना-फिरना पड़ेगा। हमें दो पैरवाले उस मगर का पता लगाना होगा।"

"तुमने ठीक कहा जयशील। तालपत्र के इस ग्रंथ को जिसने यहाँ खो दिया, उसी ने युवराज और युवरानी का अपहरण किया होगा। तब तो वह अवश्य ही कोई राक्षस होगा अथवा यक्ष, गंधर्व, किन्नर जाति का होगा।" सिद्धसाधक ने अपना संदेह प्रकट किया। फिर दोनों पास ही के पर्वतों की ओर बढ़े। उनके साथ आये राजसेवक ने कहा, "महोदय, वापस चले जाने की अनुमति दीजिए। कहिये, राजा से क्या कहूँ?"

सिद्धसाधक ने कहा, "महाराज को यह शुभ समाचार सुनाना। उनसे कहा कि जिस बरगद के पेड़ के पास उनके बच्चे ग़ायब हो गये हैं, वहाँ एक महान ग्रंथ प्राप्त हुआ है। उसकी सहायता से युवराज व युवरानी का शीघ्र पता लगायेंगे, दुष्टों का संहार करेंगे और सकुशल उन्हें राजभवन ले आयेंगे।"

सिद्धसाधक की बातों पर जयशील अपने आप हँसता रहा। फिर वे घने पेड़ों से घिरे पर्वत की ओर जाने लगे। उस समय पर्वत के नीचे के एक कुग्राम में सभी ग्रामीण अपने-अपने घरों से बाहर आ गये थे और भयभीत होकर चीख-चिल्ला रहे थे। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि इस स्थिति में क्या किया जाये।

इतना हंगामा जो हुआ, उसका कारण था उस

दिन सवेरे ज्वार के खेतों के पास हुई एक घटना। उन खेतों में एक जगह पर मचान था। चौदह साल का एक लडका खेतों की रखवाली करने उसपर बैठा हुआ था। उसने खेतों की ओर बढते आते हुए एक हाथी को देखा। उसे मालूम था कि गुलेल से हाथी को भगाना संभव नहीं है। पर वह लड़का साहसी था। हाथी ज्वार के खेतों में न घुसे, इसके लिए उसने कुछ न कुछ करने का निश्चय किया। उसने गुलेल में एक सख्त पत्थर रखा और हाथी को निशाना बनाकर फेंका।

वह पत्थर सीधे हाथी को जाकर लगा। चोट खाया हाथी साधारणतया चिंघाडता है। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। उसने देखा कि एक विचित्र आकार हाथी पर से उठा और बोला, "अरे छोकरे, पत्थर से मारते हो? मुझे क्या समझ रखा है?" फिर उसने भयंकर हुंकार भरी।

उस हुंकार को सुनकर लडका डर के मारे थरथर काँपने लगा। पसीने से उसका बदन तर ब तर हो गया। वह नीचे उतरकर भाग जाना चाहता था, पर ऐसा नहीं कर पाया। वहीं खड़ा का खड़ा रह गया।

एक-दो क्षणों में हाथी मचान के पास पहुँचा। वह हाथी मामूली हाथी-सा नहीं लग रहा था। उसका सारा शरीर मछली के मांस से ढका हुआ था। उस पर जो बैठा हुआ था, उसने मगर के सिर के आकार का शिरस्त्राण पहन रखा था। उसका शरीर मगर के चर्म से ढका हुआ था।

विकृत आकारवाला वह लड़के के पास आया और अभय हस्त दिखाते हुए बोला, ''डरो मत। जो कहता हूँ, करो। गाँव में जाओ और मेरे लिए बढ़िया आहार ले आओ। साथ ही गाँव में कोई अच्छा वैद्य हो तो उसे भी अपने साथ ले आना। शस्त्र-चिकित्सा में माहिर हो तो और अच्छा होगा। इधर देखो। मेरे पेट में पड़ी इस टूटी हुई तलवार को बाहर निकालना है और मुझे बचाना है। ऐसा करने पर तुम दोनों को बढ़िया पुरस्कार दूँगा।'' वह हाँफता हुआ बोल रहा था।

थरथर काँपते हुए उस लड़के ने उसकी सारी बातें सुनीं। वह नीचे उतरने से डर रहा था। उस विकृत आकारवाले ने जब यह जाना तो उसकी कमर पकड़कर उसे नीचे उतार दिया।

पैर जैसे ही ज़मीन पर पड़े, लड़के में साहस आ गया। उसे लगा, मानों यमकिंकर की पकड़से उसे छुटकारा मिल गया हो। वह चिल्लाता हुआ, तूफान की तरह तेज़ी से बढ़ता हुआ, खेतों के बीच में से भागता गाँव में पहुँचा।

नीम के पेड़ के नीचे चबूतरे पर ग्रामीण बैठे हुए थे। वे आपस में इधर-उधर की बातों में लगे हुए थे। दौड़ते हुए आ रहे उस लड़के को देखकर उन्हें लगा कि शायद जंगली सूअर खेतों में घुस गये होंगे या हिरणों के झुंड आ गये होंगे। उन्होंने उस लड़के से पूछा, ''यों बेतहाशा क्यों भागे आ रहे हो? क्या हुआ?''

लडके ने हाँफते हुए पूरी बात बतायी। किसी ने भी उसकी बातों का विश्वास नहीं किया। कुछ लोग तो समझ बैठे कि उसकी मति भ्रष्ट हो गयी। तब वहाँ आये ग्राम के गणाचारी ने गाँव के मुखिया से पूरा विषय जानकर कहा, ''लड़के ने जो भी बताया, यह कोई आश्चर्यजनक बात नहीं है। जब मुझपर भूत सवार हो जाता है, तब ऐसे

जल-हाथियों, मगर-मनुष्यों को ही नहीं, दो सिरवाले सिंहों और दस सिरवाले अजीब आदमियों को भी देखता हूँ।''

''पहले यह बताओ कि अब हम क्या करें? कहीं वह हम सबका सर्वनाश करने की योजना तो नहीं बना रहा है?'' मुखिया ने अपना संशय प्रकट किया।

इसे लेकर सब चर्चाएँ करने लगे। एक ने कहा, ''देखो, उसके शरीर में टूटी तलवार है। खाद्य-सामग्री के साथ-साथ एक वैद्य को भी ले आने की माँग कर रहा है। अच्छा यही होगा कि हम वैद्य चरकाचारी को भी अपने साथ ले जाएँ।''

यह सुनकर वैद्य चरकाचारी भय के मारे काँपने लगा। उसने कहा, ''मैं और उस विकृत आकारवाले राक्षस की चिकित्सा करूँ? यह काम तो एक अच्छा शस्त्र-चिकित्सक ही कर सकता है। इसके लिए हम अपने गाँव के नाई नारायण को भेजें तो ठीक होगा। जब वह राक्षस के पेट से टूटी तलवार निकालेगा तब संजीवनी जैसी प्रभावशाली औषधियों से चिकित्सा कर सकता हूँ और रक्त को बह जाने से रोक सकता हूँ।''

दो आदमी तुरंत गये और नाई नारायण को पकड़कर ले आये। वह छटपटाता हुआ बोला, ''मैं और यह काम करूँ? मुझसे यह नहीं होगा। मैं उसके पेट से तलवार निकाल नहीं सकूँगा।'' वह पागल की तरह कूदने-फांदने लगा।

लोगों में से दो हृष्ट-पुष्ट आदमियों ने नाई को कसके पकड़ लिया। गाँव के मुखिये ने ऊँचे स्वर में कहा, ''इसमें शस्त्र-चिकित्सा करने की योग्यता है या नहीं, बाद में देख लेंगे। पहले सब वहाँ चलें। अपने साथ-साथ तलवारें, भाले, कुल्हाडियाँ आदि भी लेते चलो। लडके ने जो भी कहा वह सच है या नहीं , वहाँ जाने पर ही मालूम होगा।''

लोग तलवारें, भाले, कुल्हाडियाँ आदि हथियार लिये निकल पड़े। हथियारों के साथ आते हुए लोगों की भीड़ को देखकर हाथी पर बैठे विकृत आकारवाले ने हाथी को चाबुक से मारा। हाथी सूंड उठाकर चिंघाड़ता हुआ ग्रामीणों पर टूट पड़ने के लिए चल पड़ा। *(सशेष)*
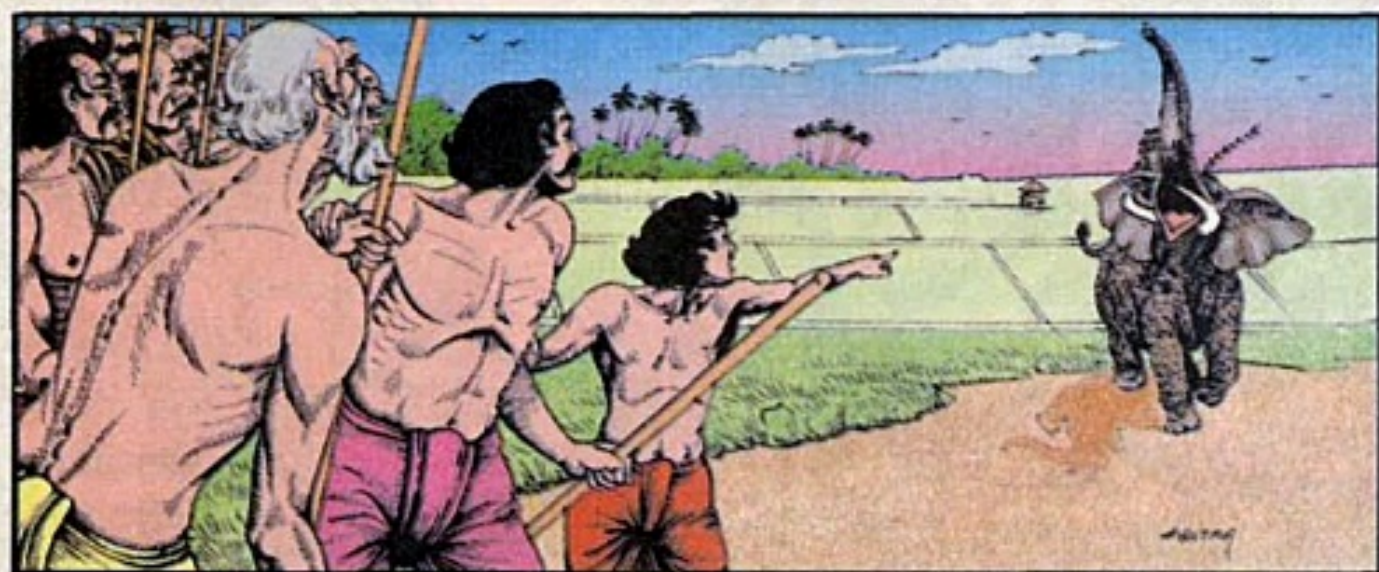
पानी का डर

जनगाँव के चारों ओर खेत थे। उस ग्राम से सटा हुआ एक तालाब था। गाँव के लोग उसमें तैरना सीखते थे। उनका विचार था कि कभी बाढ़ आ जाए या बांध टूट जाये तो सीखा हुआ यह तैरना उपयोगी सिद्ध होगा।

गोविंद इसी गाँव का चालीस साल का किसान था। वह लंबे कद का था। लगभग छः फुट का। वह तैरना बिलकुल नहीं जानता था। कोई तैरना सीखने की सलाह देता तो वह कहता, ''पानी से मैं बहुत डरता हूँ। छः फुट का लंबा हूँ। इर्द-गिर्द कोई ऐसा नाला या तालाब नहीं है जिसमें डूब जाऊँ। तो भला तैरना सीखने की ज़रूरत ही क्या है?''

एक बार वह शाम को खेत से घर लौट रहा था। बरसात का मौसम था। वह तालाब के किनारे-किनारे जाने लगा। तभी ज़ोर की वर्षा होने लगी। कुछ साफ़ दिखायी नहीं दे रहा था। अचानक उसका पैर फिसल गया और वह तालाब में जा गिरा। वह सोचने लगा, ''बाप रे, यह क्या हो गया! मैं तो तैरना नहीं जानता। अब डूबना निश्चित लगता है।'' फिर वह डुबकी लेने लगा।

तभी अचानक उसे याद आया कि तालाब लंबे अर्से से सूखा है। इतना पानी तो नहीं होगा जिसमें मैं डूब जाऊँ। इसकी याद आते ही वह खड़ा हो गया। और अपने भ्रम पर शरमा गया। मन ही मन सोचने लगा, ''मैं भी कितना बेवकूफ़ हूँ, जहाँ ज्यादा पानी नहीं है, वहाँ भी डूब जाने का डर लग गया मुझे। डर से मैं मतिभ्रष्ट हो गया! अब तो तैरना सीखना ही होगा!''

- काशीराम
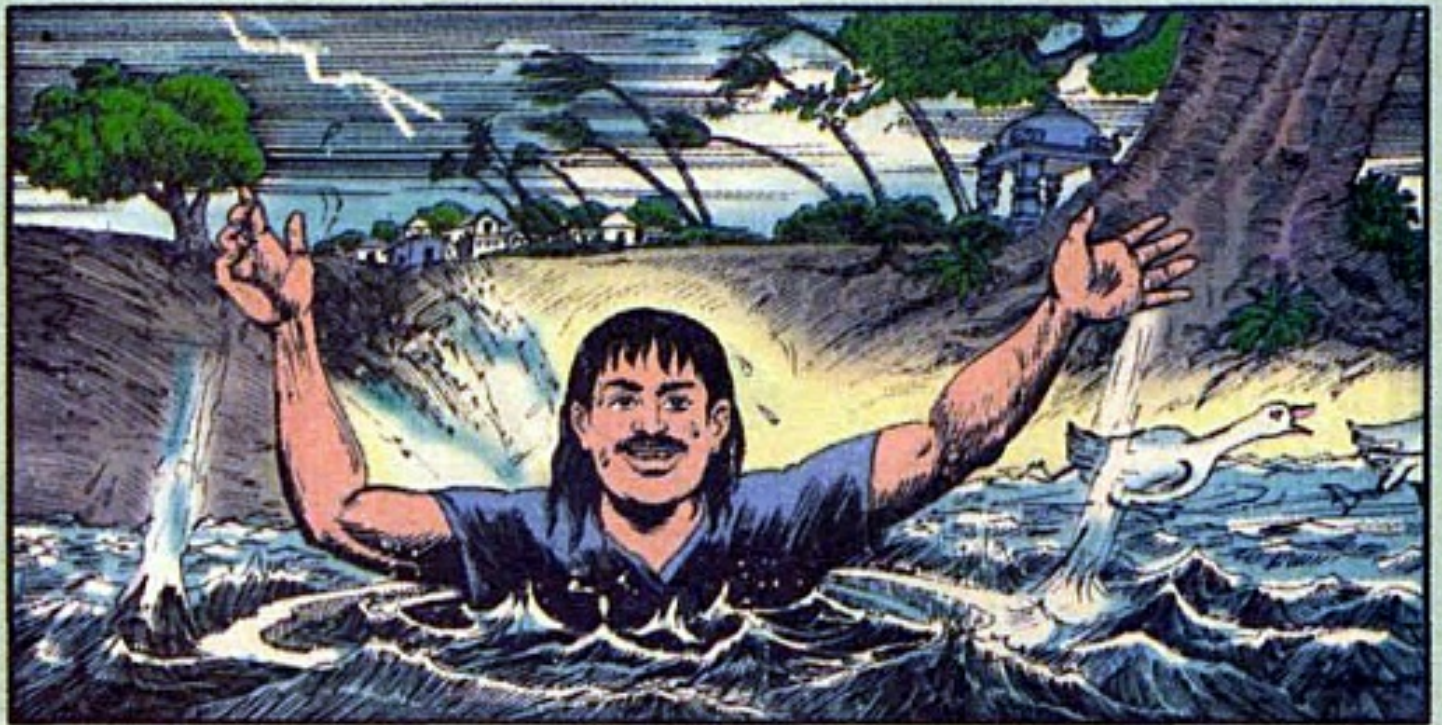
राजा विक्रम
और वेताल की
नई कथाएँ

राजा का वानप्रस्थ !

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया। पेड़ से शव को उतारा। और उसे अपने कंधे पर डाल यथावत् श्मशान की ओर बढ़ने लगा। तब शव के अंदर से वेताल ने कहा, ''तुम निर्भीक होकर इस भयंकर श्मशान में अकेले ही चले जा रहे हो। यह भूत-प्रेतों की भूमि है। यहाँ यों रहना ख़तरे से खाली नहीं है। तुम्हारी इन चेष्टाओं को देखते हुए मुझे लगता है कि तुम्हारा कोई लक्ष्य नहीं है। कभी-कभी तो शास्त्र पारंगत भी अगम्यागोचर स्थिति में पड़े रहते हैं। उन्हें स्वयं यह नहीं मालूम होता कि वे क्या करने जा रहे हैं और उन्हें क्या

करना चाहिए। उदाहरण स्वरूप तुम्हें सत्यकीर्ति नामक राजा की कहानी सुनाऊँगा। थक़ावट दूर करते हुए उसकी कहानी ध्यान से सुनना।'' फिर वेताल सत्यकीर्ति की कहानी यों सुनाने लगा।

बहुत पहले की बात है। सत्यकीर्ति बराल देश का राजा था। वह बड़े ही विवेक के साथ शासन संभाल रहा था। उसके शासन-काल में प्रजा बहुत ही सुखी थी। जैसे-जैसे उसकी उम्र बढ़ती गयी, वैसे-वैसे शासन संबंधी विषयों में उसकी आसक्ति घटने लगी। उसका शरीर विश्राम चाह रहा था। राजा को इसका आभास हो गया और उसे लगने लगा कि अच्छा यही होगा कि शासन-भार से अपने को हटा लूँ।

सत्यकीर्ति के चार बेटे थे। चारों वीर, विद्वान और बुद्धिमान थे। इसलिए राजा ने मंत्रियों और सामंतों से आवश्यक सलाह-मशविरा करने के बाद बड़े बेटे रामभद्र का राज्याभिषेक कर दिया और उसे शासन-भार सौंप दिया।

महारानी इसके दो साल पहले ही स्वर्ग सिधार गई थी। इसलिए राजा सत्यकीर्ति गृहस्थाश्रम में अकेला ही रह गया। भक्ति-मार्ग को अपनाना उसने समुचित समझा और उसी ओर वह अपना ध्यान केंद्रित करने लगा। फिर भी उसका मन भटक रहा था। बहुत विचार करने के बाद उसने किसी आश्रम में रहकर साधु-संतों की संगति में रहने का निश्चय किया। अपने मन के विचारों को उसने बृहस्पति भट्ट नामक एक पंडित को सुनाया, जो हर रोज़ उसके यहाँ आया-जाया करता था।

बृहस्पति भट्ट राजा के मनोभावों को सुनकर बहुत ही प्रसन्न हुआ और बोला, ''आपने बहुत ही सही सोचा। सांसारिक व्यामोहों से दूर रहने के लिए साधु-संन्यासियों की संगति में रहना श्रेयस्कर है। मुक्ति के लिए यही असली मार्ग है।''

फिर भी राजा थोड़ी देर तक सोचता रहा। फिर बृहस्पति भट्ट से बोला, ''आपने सत्य कहा। परन्तु आश्रम में कठोर नियमों का पालन करना पड़ता है। आहार पर नियंत्रण रखना पड़ता है। मुझे भय है कि शायद मैं ऐसा न कर पाऊँ।''

इस पर बृहस्पति ने मुस्कुराते हुए कहा, ''प्रभु, आप बिलकुल डरिये मत। पहले कुछ दिनों तक ये काम कठिन लगेंगे पर क्रमशः आपको उनकी आदत पड़ जायेगी और मुक्ति के मार्ग की ओर

अपना ध्यान केंद्रित करने लगेंगे। निस्संदेह आप सफल होंगे। यह मेरा दृढ़ विश्वास है।''

यद्यपि भट्ट की बातों का राजा पर बहुत असर पड़ा। फिर भी अपने आप पर उसे पूरा विश्वास नहीं हुआ। इसलिए उसने कहा, ''एक काम करेंगे। हमारी राजधानी के पास ही के चंपकवन में कार्तिकेय नामक संन्यासी तप में मग्न हैं। वहाँ के अनुभवों से मुझे ज्ञात हो जायेगा कि मैं इस योग्य हूँ या नहीं।'' बृहस्पति भट्ट को भी राजा का यह प्रस्ताव सही लगा। उसकी स्वीकृति पाकर राजा ने अपनी यात्रा के सारे प्रबंध कर लिये।

राजा सत्यकीर्ति एक परिचारक और एक परिचारिका को लेकर चंपक वन पहुँचा। संन्यासी कार्तिकेय के कुटीर के पास ही उसके लिए एक पर्णकुटीर का निर्माण हो चुका था। उसमें नरम बिस्तर का भी इंतज़ाम किया गया। पास ही की मेज़ पर विविध फल सजाये गये और सात्विक आहार-पदार्थ रखे गये। कुटीर के एक कोने में पूजा-मंदिर का भी प्रबंध हुआ, जहाँ अनेक देवी-देवताओं के चित्र सज्जित थे। साथ ही थे, चित्रासन, रुद्राक्षों से पिरोयी गयी जपमाला।

रात को सत्यकीर्ति ने भोजन करने के बाद विश्राम किया और सवेरे ही कार्तिकेय के दर्शन के लिए निकल पड़ा। वहाँ जाने पर उसने देखा कि संन्यासी कार्तिकेय एक आम के पेड़ के नीचे ध्यानमग्न हैं।

सत्यकीर्ति चुपके से दूर आकर एक चबूतरे पर बैठ गया। घंटों बीत जाने पर भी जब कार्तिकेय

तपस्या में ही मग्न रहे तब राजा चबूतरे से उतर गया और आसपास के प्राकृतिक दृश्यों को ध्यान से देखने लगा। थोड़ी देर बाद पीछे से 'राजा' कहकर किसी ने संबोधित किया।

मुड़कर उसने देखा कि कार्तिकेय प्रशांत मंदहास के साथ सामने खड़े हैं। सत्यकीर्ति ने सिर झुकाकर उन्हें प्रणाम किया।

कार्तिकेय ने 'सुखी भव' कहते हुए उसे आशीर्वाद दिया और कहा, ''आओ, यहाँ इस चबूतरे पर बैठते हैं।'' दोनों जब चबूतरे पर बैठ गये तब मन्द मुस्कान के साथ कार्तिकेय ने पूछा, ''क्या तुम्हारे सब सेवक चले गये?''

इस प्रश्न पर सत्यकीर्ति थोड़ा शरमा गया और धीमे स्वर में बोला, ''पर्णकुटीर में मेरे लिए आवश्यक सुविधाओं का प्रबंध करने के बाद वे

राजधानी लौट गये। स्वामी, अब मेरे साथ केवल एक सेवक और एक सेविका मात्र हैं। जब मैं वानप्रस्थ जीवन का आदी बन जाऊँगा, तब वे दोनों भी चले जायेंगे। आप तो जानते ही हैं कि मेरा जीवन सदा सुखपूर्वक गुजरा है। आखिर राजा जो ठहरा।'' फिर उसने सविस्तार यहाँ आने का कारण बताया।

थोड़ी देर तक शांत रहने के बाद राजा ने फिर कहा, ''आपके चंपक वन में भिन्न-भिन्न प्रकार के फल-फूलों को देखकर मेरे मन में अनेक विचार आ रहे हैं।''

''मैं भी तो जानूँ कि वे विचार क्या हैं?'' कार्तिकेय ने पूछा।

''स्वामी, इस चंपकवन में फल और फूलों के वृक्ष भरे पड़े हैं। साथ ही औषधियोंवाली कितनी ही लताएँ और छोटे-छोटे पौधे भी हैं। राजवैद्य भीष्माचार्य को यहाँ बुलवाऊँगा और जानना चाहूँगा कि यहाँ औषधि के महत्ववाले कितने पौधे व लताएँ हैं। रोग-निरोधक औषधियों को बनवाने का काम भी उन्हें सौंपना चाहता हूँ।'' सत्यकीर्ति ने कहा।

सब सुनने के बाद कार्तिकेय ने गंभीर स्वर में कहा, ''राजन्, तुम ज्ञानी हो। मैंने जो भी सुना, उससे स्पष्ट है कि तुम सकल शास्त्रों में पारंगत हो। क्या तुम विश्वास करते हो कि केवल आँख बंद करके ध्यान करने मात्र से, तप-जप करने मात्र से मुक्ति प्राप्त होगी?''

सत्यकीर्ति उत्तर दिये बिना मौन रह गया। तब कार्तिकेय ने उससे कहा, ''देखो राजन्, तुम तुरंत राजधानी लौट जाओ। आराम से ज़िन्दगी गुज़ारो। राजा होने के नाते अपने विचारों को व्यवहार में लाओ। उससे मनुष्य जाति का भला होगा। चंपकवन के बारे में तुम्हारे जो विचार हैं, वे बहुत ही उत्तम हैं।''

बिना कुछ कहे सत्यकीर्ति ने कार्तिकेय के चरण स्पर्श किये और अनुमति लेकर वहाँ से चला गया। दूसरे ही दिन वह राजधानी लौट गया।

बेताल ने यह कहानी सुनाने के बाद राजा विक्रमार्क से कहा, ''राजन्, संन्यासी कार्तिकेय ने सत्यकीर्ति को सकल शास्त्रों में पारंगत कहा। वानप्रस्थ और तपस्या के लिए जो ज्ञानोपदेश देना था, उसे दिये बिना राजधानी लौट जाने की सलाह दी। मेरी दृष्टि में उनका यह काम न्यायोचित व संगत नहीं है। संन्यासी सर्वस्व त्याग देते हैं। आध्यात्मिक चिंतन के साथ

तपस्या करते हैं। ऐसे संन्यासियों में साधारणतया अहंभाव सहज रूप से होता भी है। इसीलिए कार्तिकिय ने राजा को ऐसी सलाह दी। परंतु कम से कम राजा सत्यकीर्ति को चाहिए था कि वह मार्ग-दर्शन करने के लिए संन्यासी से विनती करे, और तपस्या करने की अनुमति माँगे। ऐसा न करके संन्यासी के कहते ही दूसरे ही दिन वह राजधानी लौट गया। क्या यह उसका अविवेक भरा काम नहीं है? अब तो भविष्य में वह न तो वानप्रस्थ पा सकेगा, न ही तपस्या कर पायेगा। जीवन मरण से मुक्ति पाने की उसकी आकांक्षा, अपूर्ण रह जायेगी। है न? मेरे इन संदेहों के समाधान जानते हुए भी चुप रहोगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।''

विक्रमार्क ने तब कहा, ''आर्योक्ति है कि मानव की सेवा ही माधव की सेवा है। सत्यकीर्ति दीर्घकाल से मानव की सेवा में लगा हुआ था। किन्तु बुढ़ापे के कारण, शारीरिक बलहीनता के कारण शासन-भार से हटने का उसने निश्चय किया। वह अब वानप्रस्थ व तपस्या के बारे में सोचने लगा। वह समझता था कि इन्हीं से मुक्ति मिलेगी। परंतु यह केवल उसका अज्ञान था। कार्तिकिय ने उसके इस अज्ञान की ओर इंगित किया। हर मनुष्य प्रवृत्तियों का सम्मिश्रण है। राजा अपनी प्रवृत्ति के अनुसार प्रजा का कुशल-मंगल चाहनेवाला धर्मशील है। इसी कारण यद्यपि वह तपस्या करने के उद्देश्य से कार्तिकिय के आश्रम में आया, फिर भी चंपकवन में पायी जानेवाली औषधियों के बारे में ही सोचने-विचारने लगा। अपनी सेवा कराने अपने साथ दो सेवकों को भी ले आया, क्योंकि वह इसका आदी हो गया था। कार्तिकिय राजा की प्रवृत्तियों को पहचान गया। इसीलिए सत्यकीर्ति को अपने राज्य में लौट जाने का आदेश दिया। सूक्ष्मग्राही सत्यकीर्ति संन्यासी की बातों में छिपे गूढ़ार्थ को समझ गया। इसीलिए बिना कुछ कहे दूसरे ही दिन वह राजधानी लौट गया।

राजा के मौन-भंग में सफल बेताल शवसहित गायब हो गया और पेड़ पर जा बैठा।

(आधार : सुभद्रादेवी की रचना)

अपने भारत को जानो

प्रश्नोत्तरी

अधिकांश बच्चों की परीक्षाएँ अप्रैल में खत्म हो चुकेंगी और वे छुट्टियाँ मनाने के मनोभाव में होंगे, यद्यपि उनमें से कुछेक को स्कूल बंद होने की प्रतीक्षा रहेगी। इसलिए इस महीने के लिए किसी विषय विशेष की अपेक्षा मिश्रित प्रश्नावली देंगे। ठीक है?

१. मिल्खा सिंह ने ओलम्पिक खेलों में ४०० मी. में विश्व रिकार्ड बनाया। किस वर्ष और कहाँ वे खेल हुए?

२. सन् १९०० में इडा स्कूडर ने दक्षिण भारत के एक छोटे शहर में एक कमरे का क्लिनिक खोला। अब वह दुनिया की एक मशहूर संस्था है। नाम बताओ।

३. गत वर्ष भारत में जन्मे वी.एस. नयपाल ने साहित्य में नोबेल पुरस्कार जीता। सन् १९७१ में उसने बुकर प्राइज़ जीता। उसकी किस पुस्तक पर यह इनाम मिला?

४. भारत में प्रथम वाणिज्य उड़ान सन् १९३२ में किया गया, जब जे.आर.डी. टाटा बम्बई उड़कर गये। उन्होंने कहाँ से उड़ान शुरू की?

५. महाकुम्भ मेला भारत में एक नदी के किनारे चार स्थानों पर लगता है जिसमें नासिक शामिल है। नदी का नाम बताओ।

६. किसने पहली बार १९७७ में संयुक्त राष्ट्र संघ की जनरल असेम्बली में हिन्दी में भाषण दिया?

७. रॉयल बंगाल टाइगर हमारा राष्ट्रीय पशु है। पहले किसी अन्य पशु से इसका पृथक्करण किया गया। वह कौनसा पशु है?

८. भारत ने १९८२ में अन्टार्कटिका में प्रथम आधार स्थापित किया। उस आधार का क्या नाम है?

९. रोनन्ड रॉस जब भारत में एक अस्पताल में काम कर रहा था तब उसने मलेरिया के जीवाणु की खोज की। कौनसा अस्पताल था?

१०. २०० वर्षों में पहली बार भारत में सन् १९९१ में ज्वालामुखी का विस्फोट हुआ। कहाँ हुआ था?

(उत्तर अगले महीने)

मार्च प्रश्नोत्तरी के उत्तर

१. मुनि।

२. पार्वती, गिरिजा।

३. अहल्या, ऋषि गौतम की पत्नी, राम

४. ऐरावत।

५. उग्रसेन।

६. कार्कोतक।

७. गान्धारी, हस्तिनापुर केराजा धृतराष्ट्रकी पत्नी।

८. दण्डकारण्य।

भारत की गाथा

एक महान सभ्यता की झाँकियाँ : युगों-युगों से सत्य के लिए इसकी खोज

२७. एक नवीन शिक्षण पद्धति

''ग्रैंड पा, तब आप क्या यह कहेंगे कि बृहत् कथा विश्व का प्रथम कथा संकलन है?'' चमेली ने प्रोफेसर देवनाथ से उत्साह के साथ पूछा।

''हाँ, मेरे बच्चे,'' प्रोफेसर ने पुष्टि की।

चमेली ने एक पत्रिका खोलकर उसमें प्रकाशित एक लेख की ओर प्रोफेसर का ध्यान आकर्षित किया। यह एक अन्य प्राचीन कथा ग्रंथ 'पंचतंत्र के' विषय में था। उसके लेखक ने उसे भारत के प्रथम कहानी-संग्रह के रूप में वर्णित किया था।

''यदि 'बृहत् कथा' विश्व का प्रथम कथा संकलन है, तो इसे भारत का भी प्रथम कथा-संकलन होना चाहिए। यदि 'पंचतंत्र' भारत का प्रथम कथा संकलन है तो यह 'बृहत् कथा' से अधिक प्राचीन होगा। इसका अर्थ यह हुआ कि 'पंचतंत्र' विश्व का प्राचीनतम कथा-संकलन है।'' चमेली ने अपना विचार प्रकट किया।

''हाँ, चमेली, इस लेख का लेखक अंशतः ठीक है और अंशतः गलत। यद्यपि गुणाढ्य की 'बृहत् कथा' को पंचतंत्र से अधिक प्राचीन माना जाता है, लेकिन यह मानवता की लुप्त संपत्ति है। इस ग्रंथ का जो अंश हम आज पढ़ते हैं, वह कथा

विश्वावसु

सरित सागर है, जिसे ग्यारहवीं शताब्दी में सोमदेव ने लिखा था, जबकि 'पंचतंत्र' यदि और पहले नहीं तो तीसरी शताब्दी में लिखा गया था।'' प्रोफेसर कुछ देर चुप रहे।

''ग्रैंड पा, पहले चाय पी लीजिए ! फिर बताइयेगा ! संदीप चाय ला रहा है।''

''आ जाने दो। मुझे जल्दी नहीं है।'' देवनाथ ने कहा। ''जैसा कि मैं कह रहा था, कथा सरित सागर और पंचतंत्र के बीच कोई झगड़े की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए। दोनों ही प्रथम हैं : 'कथा सरित सागर' प्रथम कहानी-संग्रह है और पंचतंत्र प्रथम नीति कथा संग्रह है।'' प्रोफेसर ने कहा।

''विष्णु शर्मा सचमुच महान था ! उसने कितनी बड़ी चुनौती स्वीकार की और सफलतापूर्वक उसका पालन किया।''

''क्या आपने चुनौती कहा ग्रैंड पा? आपने 'बृहत कथा' की उत्पत्ति की कहानी हमें सुनाई। क्या 'पंचतंत्र' की उत्पत्ति की भी कोई कहानी है?'' संदीप ने पूछा, जो प्रोफेसर के लिए चाय लेकर कमरे में प्रवेश कर चुका था।

''है, इसकी भी एक कहानी है।'' प्रोफेसर ने कहा और बच्चों को उस ग्रंथ की पृष्ठभूमि बताई।

एक समय महिलारुप्य नामक एक राज्य में अमरशक्ति नाम का राजा राज्य करता था। वह अपने तीन बेटों के आचरण के कारण बहुत दुखी था। वे बुरे बच्चे नहीं थे, परंतु उनमें एक भयंकर दोष था। वे पढ़ना-लिखना या कुछ सीखना नहीं चाहते थे। वे शिक्षक को देखना भी पसंद नहीं करते थे। राजा ने उनकी मोटी खोपड़ी में कुछ अच्छी बुद्धि डालने की पूरी कोशिश की, पर व्यर्थ !

उन बेटों में से एक को एक दिन राज-सिंहासन का उत्तराधिकारी बनना था। लेकिन ऐसे युवक को राजा राज्य का प्रशासन कैसे सौंप दे जो पढ़ने-लिखने से इनकार करे। राजा चिंतित था। उसने अपने राज्य के प्रसिद्ध विद्वानों और चिंतकों को बुलाया और निःसंकोच उनके सामने अपनी समस्या रखी। ''कृपया यह बतायें कि मैं अपने बेटों को कैसे शिक्षित करूँ?'' उसने कहा।

विद्वानों ने अनेक सुझाव दिये, लेकिन कोई भी व्यावहारिक नहीं लगा। राजा जब निराश होने लगे तब एक विद्वान ने विष्णु शर्मा नाम के एक विद्वान से परामर्श लेने का सुझाव दिया। वह

जटिल समस्याओं को मौलिक तरीकों से सुलझाने में माहिर था।

राजा के निमंत्रण पर विष्णु शर्मा राजमहल में आया। राजा उसकी बुद्धि और ज्ञान से अवश्य प्रभावित हुए होंगे। जब विष्णु शर्मा ने तीनों राजकुमारों को पढ़ाने का दायित्व स्वीकार कर लिया तब राजा ने उसे पर्याप्त धन-दौलत देने का प्रस्ताव रखा।

किन्तु विष्णु शर्मा ने कुछ भी लेने से इनकार करते हुए कहा, ''मैं शिक्षा और ज्ञान बेचता नहीं। इसके अतिरिक्त, इसका मेरे लिए कोई उपयोग नहीं है, क्योंकि मैं काफी वृद्ध हो चुका हूँ।''

विष्णु शर्मा ने उन लड़कों से दोस्ती कर ली और उन्हें वह एक एकान्त स्थान पर ले गया संभवतः महल की छत पर जहाँ एक बट वृक्ष की छाया पड़ती थी। उसने यों आरंभ किया : ''गोदावरी नदी के किनारे एक विशाल शालमाली वृक्ष था जहाँ अनेक दिशाओं से पक्षी आराम करने आते थे।''

और वह कहानी पर कहानी वर्णित करता रहा - अच्छे-बुरे लोगों की कहानी, विश्वास और विश्वासघात की कहानी, चतुराई और भोलेपन, भाग्य और दुर्भाग्य, अपराध और दण्ड, कपट और निष्कपटता की कहानी। कहानियों के अंदर कहानियाँ होतीं और एक कहानी का दूसरी अनुगमन करती - कहानी कहने की विशिष्ट प्राचीन भारतीय शैली, बाद में जिसका अनुकरण 'अरबियन नाइट्स' ने किया।

जब तक ऋषि और मनीषी विष्णु शर्मा ने राजकुमारों के साथ बैठकों की शृंखला समाप्त की, तब तक वे शिक्षित हो चुके थे जबकि उन्हें भान तक न हुआ कि उन्हें शिक्षा दी जा रही है। वे कहानियों में लीन हो गये और उस महान शिक्षक ने उन्हें क्या नहीं पढ़ाया - राजनीति, कूटनीति, मनोविज्ञान, समाज शास्त्र और वे सभी विषय जो राजकुमारों को पढ़ना चाहिए।

पंचतंत्र शब्द का अर्थ है - ज्ञान की पाँच श्रेणियाँ। जब प्रोफेसर चुप हो गये तब चमेली ने बड़े प्यार से अनुरोध किया, ''ग्रैंड पा, क्या आप इस महान ग्रंथ से कम से कम एक कहानी सुनाने की कृपा नहीं करेंगे?''

''मेरे बच्चे, मुझे पूरा विश्वास है कि तुम पंचतंत्र की अनेक कहानियों से परिचित हो। उदाहरण

के लिए, क्या तुम उस बंदर की कहानी नहीं जानते जिसने अपने सो रहे मालिक के सिर पर बैठी मक्खी को मारने की कोशिश में मालिक के ही प्राण ले लिये? क्या तुम्हें उस कछुए की कहानी याद नहीं है जो दो हंसों द्वारा पकड़ी छड़ी से लटका था पर अनावश्यक ही मुँह खोलने के कारण मौत के खन्दक में जा गिरा। और मुझे पक्का विश्वास कि तुम उन तीन मित्रों की कहानी भी जानते हो जो मरे हुए शेर को जीवित करने की विद्या तो जानते थे लेकिन उससे अपनी रक्षा करने की विद्या उन्हें नहीं मालूम थी।''

''निस्सन्देह, मुझे वे मालूम हैं। परंतु क्या वे सभी पंचतंत्र की कहानियाँ हैं?'' संदीप ने विस्मयपूर्वक कहा।

''हाँ, वे सब पंचतंत्र की ही हैं। फिर भी, मैं तुम्हें उस ग्रंथ की सबसे छोटी कहानी सुनाता हूँ जो आज मानवता के लिए सबसे अधिक प्रासंगिक है। तुमने दो सिरवाले सांपों की रिपोर्ट पढ़ी है और दो सिरों के साथ जन्मे एक बालक की भी? पंचतंत्र के अनुसार एक समय दो सिरों का एक पक्षी था। दोनों सिर एक दूसरे की विपरीत दिशा में थे। एक दिन एक सिर को एक खोल में अमृत मिला। दूसरा सिर उसमें से एक हिस्सा लेना चाहता था। लेकिन पहले सिर ने उसे मना कर दिया। शीघ्र ही दूसरे सिर को विष मिला जो वह पी गया। क्योंकि दोनों सिर एक ही शरीर में थे, इसलिए पक्षी की मौत हो गई।'' प्रोफेसर ने कहानी समाप्त कर बच्चों की ओर सारगर्भित दृष्टि से देखा।

''हम लोग समझ गये। हम सभी मानव एक ही धरती की संतान हैं। आज की स्थिति ऐसी है कि किसी एक देश द्वारा किया गया कोई भी मूर्खतापूर्ण कार्य पूरी पृथ्वी को खतरे में डाल सकता है।'' संदीप ने कहा।

प्रोफेसर देवनाथ संतोष के साथ मुस्कुरा पड़े।

भारतीय पर्व

अप्रैल में नया वर्ष !

अनेक भारतीय समुदायों के लिए अप्रैल का महीना विशिष्ट महत्व का है। देश के अनेक भागों में यह नये वर्ष का सूचक है। नई फसल के पर्व के रूप में भी इसे मनाया जाता है।

बैसाखी

पंजाबियों के लिए १३ अप्रैल (कभी-कभी १४ अप्रैल) को पड़नेवाली बैसाखी से नया वर्ष आरम्भ होता है। इसे नई फसल का त्योहार भी माना जाता है।

इस अवसर पर रबी फसल कटाई के लिए तैयार हो जाती है; खेत हरे-भरे दिखाई पड़ते हैं। यह प्रचुरता का मौसम होता है। स्वभावतः गाँवों में लोग खुशी की उमंग में रहते हैं। ऐसे मौके पर उत्सव मनाने और गाने-नाचने के अतिरिक्त और क्या किया जा सकता है!

बस! इसी को बैसाखी कहते हैं। यह एक सामुदायिक पर्व है। इस अवसर पर पुरुष और नारी मिलकर बहुत तगड़ा और ओजपूर्ण भांगड़ा और गिद्दा नृत्य करते हैं।

इस अवसर पर सभी लोग भड़कीले, रंगीन और परम्परागत वस्त्र धारण करते हैं। लोग ताजे गेहूँ के आटे की रोटी, देसी घी और गुड़ खाते हैं, उत्सवाग्नि जलाते हैं और उसके चारों ओर नृत्य करते हैं। कुल मिलाकर यह आनन्द मनाने और खाने-पीने का दिन है।

सिक्खों के खालसा आन्दोलन का आरम्भ इसी दिन हुआ था। इस दिन दसवें सिक्ख गुरु गुरुगोविन्द सिंह ने सन् १६९९ में खालसा आन्दोलन अथवा सिक्ख भाईचारे का सूत्रपात किया था।

गुड़ी पड़वा

गुड़ी पड़वा महाराष्ट्र के लोगों के लिए नया साल है। यह चैत्र मास के प्रथम दिवस को मनाया जाता है। यह भी नई फसल का त्योहार है। इस अबसर पर नये कार्य प्रारम्भ किये जाते हैं।

इस दिन लोग अपने आंगन में विजय का प्रतीक गुडी प्रदर्शित करते हैं। गुड़ी एक लग्गे पर औंधा रखा हुआ कलश या पात्र होता है। कलश को रेशम में लपेटा जाता है और गेंदा पुष्प तथा आम्र पल्लव से सजाया जाता है। ऐसा विश्वास है कि गुड़ी अमंगल से रक्षा करता है और समृद्धि लाता है। यह प्रकृति की उदारता का भी उत्सब है। इसे सूर्योदय से सूर्यास्त तक रखा जाता है।

इस दिन लोग नये वस्त्र पहनते हैं और प्रीतिभोज में भाग लेते हैं। द्वारों को रंग-बिरंगी रंगोलियोंसे सजाया जाता है। दिन में सबेरे-सबेरे लोग नीम की पत्ती, आजवायन, इमली और गुड़ के मिश्रण की परम्परागत चटनी बनाकर खाते हैं। ऐसा विश्वास किया जाता है कि इसमें रक्तदोष को दूर करने की शक्ति है।

महाराष्ट्र के लोगों को विश्वास है कि इसी दिन भगवान राम ने वानर राजकुमार बाली को परास्त किया था। कुछ लोगों का यह भी विश्वास है कि यह पर्व उस दिन की स्मृति में मनाया जाता है जब भगवान विष्णु ने पृथ्वी की रक्षा के लिए मत्स्यावतार लिया था।

नव वर्ष

वैशाख माह का पहला दिन बंगालियों द्वारा बड़े धूमधाम से नव बर्ष दिवस के रूप में मनाया जाता है। इसे पोयला वैशाख भी कहते हैं। दरवाजों पर बनी सुन्दर रंगोलियाँ, पवित्र जल से भरा और आम्र पल्लवों तथा नारियल से सजा कलश और मिष्टान्न इस अवसर के विशेष आकर्षण हैं।

रोंगली बीहू

असमी नव वर्ष रोंगली बीहू अप्रैल के मध्य में आता है। इसे नव कृषि वर्ष का आरम्भ माना जाता है और बीज-वपन काल का सूचक है। इसे बोहग बीहू भी कहा जाता है। असमी लोगों द्वारा प्रति वर्ष मनाये जानेवाले सभी बीहू पर्वों में इसे सर्वाधिक रंगबिरंगा माना जाता है।

आनन्द और मनोरंजन इस पर्व का महत्वपूर्ण पक्ष है।

युवा लड़के-लड़कियाँ सामुदायिक स्थलों पर परम्परागत बीहू गीतों या लोक गीतों की धुन पर प्रसिद्ध बीहू नृत्य करते हैं। इस नृत्य के साथ परम्परागत वाद्य यंत्रों जैसे ढोल, मृदंग और भैंस के सींगों से बने पीपा का प्रयोग किया जाता है।

विशु

मलयाली नव वर्ष को विशु कहा जाता है। यह मलयालम महीना 'मेदम' (अप्रैल-मई) का प्रथम दिवस होता है।

विशुकानी अथवा शुभ दृश्य के अवलोकन की प्रथा नव वर्ष उत्सव का महत्वपूर्ण भाग होता है। समृद्धि के सूचक जैसे अक्षत, नया परिधान, स्वर्ण, खीरा, ताम्बूल पत्र, सुपारी, दर्पण, अमलतास, शास्त्र और मुद्रा, कांस्य धातु के बर्तन-'उरुली' में रखे जाते हैं जिसे 'कनी' कहते हैं। कनी की व्यवस्था परिवार के सबसे बड़ी सदस्या द्वारा विशु की पूर्व रात्रि में की जाती है। ऐसा विश्वास किया जाता है

कि विशु के दिन जो व्यक्ति सबसे पहले सवेरे इसे देखता है, उसके लिए नव वर्ष सौभाग्यशाली सिद्ध हो सकता है।

लोग इस अवसर पर 'कोडी वस्त्रम' या नया वस्त्र धारण करते हैं। परिवार के वयोवृद्ध सदस्य इस दिन उन्हें मुद्रा और मिष्टान्न बाँटते हैं जो इनसे आशीर्वाद माँगने आते हैं। इसे 'विशुकैनीतम्' कहते हैं। बच्चे प्रायः इस परम्परा को पसन्द करते हैं और पैसे एकत्र करने के लिए बड़ों के पास जाते हैं। इसे वे 'विशुवेला' के मेले में खाने पीने और आनन्द मनाने में खर्च करते हैं।

पुत्ताण्डु

तमिल लोग नया साल १४ अप्रैल को मनाते हैं जो चित्रैई महीने के आरम्भ का भी सूचक है। इसे वर्षपिरप्पु अथवा नये साल का आरम्भ भी कहा जाता है। वर्ष का अर्थ है साल और पिरप्पु का अर्थ है जन्म या आरम्भ।

लोग दिन का आरम्भ कन्नी दर्शन या मंगलसूचक दृश्य के अवलोकन से करते हैं। यह सामान्यतः शुभ वस्तुओं का अम्बार होता है, जिसमें सोना, चाँदी, फल, सब्जी, पान का पत्ता, सुपारी, पुष्प, अक्षत तथा नारियल शामिल है। ऐसा विश्वास है कि कन्नी दर्शन से सालो भर

समृद्धि और सौभाग्य बना रहता है।

इस दिन लोग मंदिरों में जाते हैं और पंचांगम पढ़ते हैं। इस त्योहार पर भोजन में लोग माँगाय पचड़ी अवश्य खाते हैं जो कच्चे आम, नीम के किसलय और गुड़ से बनाया जाता है। यह एक साथ ही मीठा, कड़वा और खट्टा होता है। लोग इसे जीवन में आनेवाले उत्थान-पतन का प्रतीक मानते हैं।

इस अवसर पर घर के प्रवेश द्वारों को कोलम अथवा चावल के आटे से बनी अल्पना और तोरणम अथवा आम्र पल्लवों की माला से सजाते हैं।

युगादि

आन्ध्र प्रदेश और कर्नाटक में नव वर्ष दिवस को युगादि कहते हैं। तेलुगु नव वर्ष चैत्र सुद्दा पंचमी से आरम्भ होता है। यह बसन्त ऋतु के आरंभ का भी सूचक है। सूखे खेत हरे-भरे हो जाते हैं।

युगादि शब्द 'युग' और 'आदि' की संधि है जिसका अर्थ है नये वर्ष का आरंभ। आम लोगों का विश्वास है कि ब्रह्मा ने इसी शुभ दिवस को सृष्टि का कार्य आरंभ किया था। इसलिए यह दिन वर्ष का प्रथम दिवस बन गया। इस दिन नये कार्यों का प्रारम्भ शुभ माना जाता है।

इस दिन घरों को तोरण या आम्र पल्लवों के सूत्र से सजाया जाता है। लोग नये वस्त्र धारण करते हैं और मंदिरों में दर्शन के लिए जाते हैं और शामको पंचांगम का अध्ययन करते हैं।

लोग युगादि पचड़ी बनाकर खाते हैं जो ताजी इमली, मिर्च, नमक, नीम की पत्ती, गुड़ और कच्चे आम का मिश्रण होता है।

वाग्विदग्ध - बीरबल

अकबर जन-कल्याण के सुधार कार्यों के लिए प्रसिद्ध थे। फिर भी, एक समस्या उन्हें परेशान कर रही थी। उनमें से कितने सचमुच ईमानदार हैं? यह प्रश्न राजा ने अपने प्रिय दरबारी के सामने रखा जब वे दोनों एक शामको अकेले थे।

''यह आसानी से पता लगाया जा सकता है, शहनशाह !'' किसी विचार के लिए अपने दिमाग पर जोर डालते हुए कहा। ''पहले गरीबों के लिए एक प्रीति भोज की घोषणा कीजिए और कहिए कि हरेक को एक घड़ा दूध योगदान के रूप में देना चाहिए।

''लेकिन तब हमें कैसे पता चलेगा कि कौन ईमानदार है और कौन नहीं?'' परेशान से शहनशाह ने कहा। बीरबल ने केवल यह कहा, ''महाराज ! जैसा मैं कहता हूँ, वैसा कीजिए और हमें इसका जवाब मिल जायेगा।''

शहनशाह ने घोषणा कराने का आदेश दे दिया : हरेक को अमुक दिन एक घड़ा दूध लाना चाहिए और महल में प्रवेश करने के पूर्व प्रवेश द्वार पर रखे बड़े पात्र में उसे डाल देना चाहिए।

अनुबद्ध दिवस आ गया। लोगों की लम्बी पंक्ति में हरेक के पास दूध का घड़ा था जिसे वे बहुत बड़े पात्र में डाल रहे थे।

जब आखिरी आदमी दूध डाल चुका तब बड़े पात्र को ढक दिया गया और फिर उसे सावधानीपूर्वक उठाकर पोर्टिको में ले जाया गया जहाँ अकबर, बीरबल और अन्य दरबारी प्रतीक्षा कर रहे थे।

बीरबल ने शहनशाह की ओर देखा। शहनशाह का संकेत मिलते ही उन्होंने सेवकों को ढक्कन हटा कर और एक कलछी दूध निकाल कर सबको दिखाने के लिए कहा।

"पानी !" शहनशाह हैरान होकर बोला।
"हाँ हुज़ूर ! पानी की तरह लोगों की ईमानदारी भी पारदर्शक के समान स्पष्ट है।"

यह नारियों का दुर्ग है !

उड़ीसा का यह मंदिर भिन्न है। नहीं, इसकी मीनार सबसे ऊँची नहीं है और न इसमें पूरे विश्व की सबसे मूल्यवान प्रतिमा है। इसमें क्या है कि

इसके पुरोहित नारी हैं। है न अनोखी बात ! उड़ीसा के तटवर्ती जिला केन्द्रपारा के सत्यभाया में १३०० वर्ष पुराने मंदिर में नारियाँ ही अनुष्ठान करती आ रही हैं। यहाँ के मंदिर-गर्भ में पुरुष पुरोहितों को प्रवेश करने नहीं दिया जाता। मंदिर के सारे अनुष्ठान स्थानीय मछुवारे जाति दलाई की नारियों द्वारा संपन्न कराये जाते हैं।

पतंग कटी रे !

वह कौनसी चीज़ है, जो उड़ती तो आकाश में है, किन्तु नियंत्रित होती है, ज़मीन से? क्या तुम्हें नहीं मालूम? कितना आसान है ! पतंग निस्सन्देह ! सभी उत्सुक पतंगबाज जानते हैं कि उनकी डोरी साधारण डोरी नहीं है। काँच के चूर्ण से इसे मंजा गया है, जिससे यह बहुत मजबूत हो जाती है और इसे काटना अधिक कठिन हो जाता है।

जनश्रुतियाँ बताती हैं कि सन् १८०० के उपरान्त के वर्षों में जयपुर के महाराजा सवाई राम सिंह द्वितीय और उसके पतंग-गुरु महल के बरामदे पर से पतंग उड़ा रहे थे। वे लोग किसी अन्य पतंग के साथ भीषण प्रतियोग में उलझ गये थे। उन्हें तब और भी खीज आई जब उनकी पतंग को प्रतियोगी ने काट दिया।

राजा उत्सुक था। जब उसने पूछताछ की तब पता चला कि वे अज्ञात विजेता दो भाई थे - चूड़ामणि और कालूराम। वे कुम्भकार थे जिन्होंने डोरी को काँच चूर्ण से मंजा करने की प्रविधि विकसित की थी। अतः जब तुम अगली बार किसी की पतंग काट दो तो चूड़ामणि और कालूराम को उनकी खोज के लिए धन्यवाद देना न भूलना।

शिल्पी पूर्वज

क्या तुमने छोटे बच्चों को दीवारों पर टेढ़ी-मेढ़ी लकीरें खींचते नहीं देखा है? जब कभी अगली बार देखो तो उन्हें डाँटना-डपटना नहीं, क्योंकि तुम्हें मालूम होना चाहिए कि वे लोग सिर्फ वही कर रहे हैं जो हमारे प्राचीन पूर्वजों ने किया था। तुम्हें जानकर आश्चर्य होगा कि हमारे पूर्वज, निस्सन्देह कागज पर नहीं, परन्तु गुफाओं की दीवारों पर चित्रकारी करते थे !

मध्यप्रदेश में भोपाल के निकट विन्ध्य शृंखलाओं में भीमबेटका की शैल-गुफाओं की दीवारों पर विस्तृत चित्रकला के दृश्य देखे जा सकते हैं। इतिहासकारों के अनुसार ये चित्रकलाएँ दस हजार वर्षों से भी अधिक पुरानी हैं। इन चित्रों में तत्कालीन दैनिक जीवन के दृश्य जैसे आखेट, मधु-संचय, मुखौटा नृत्य, पशुयुद्ध, मानव-सवार एवं आयुद्ध दर्शित किये गये हैं। बहुत से पशु जैसे जंगली सूअर, हिरन, सिंह, बाघ, कुत्ता आदि भी चित्रित किये गये हैं। वे प्रायः लाल और श्वेत रंग में हैं और कहीं-कहीं हरा और पीला का पुट है।

दंगल पर पानी

बारहवीं शताब्दी में भारत के कुछ भागों में 'मल्ल-स्तम्भ' नामक एक विचित्र खेल खेला जाता था।

यह एक प्रकार का मल्लयुद्ध था जिसमें दो प्रतिद्वंद्वी अपने 'मंझलों' के कन्धों पर बैठकर कुश्ती

करते थे। और मानों इन 'मंझलों' के लिए यह कष्ट काफी न हो, पूरे खेल तक उन्हें कमर भर पानी में खड़ा रहना पड़ता था।

अब तुम्हीं ध्यानपूर्वक सोचो कि ये बेचारे 'मंझले' मंझधार में हैं कि नहीं?

कर्नाटक की एक लोक कथा

कर्नाटक दक्कन पठार के पश्चिम १९२,००० वर्ग कि.मी. में फैला हुआ है। यह पूरब में आंध्र प्रदेश से, उत्तर में महाराष्ट्र से तथा दक्षिण में तमिलनाडु और केरल से घिरा हुआ है। इसका सम्पूर्ण क्षेत्र भारत के सोलहवें भाग के बराबर है और इसकी आबादी ५ करोड़ २० लाख है।

यहाँ के लोग कन्नडिगाज कहलाते हैं और कन्नड भाषा बोलते हैं। कुछ विद्वानों का कहना है कि इसका नाम कारी-नाडू यानी काली मिट्टी का देश से लिया गया है, जबकि दूसरे विद्वानों का मत है कि राज्य के नाम का वास्तविक अर्थ है कारुनाडू यानी सुन्दर देश!

इसकी राजधानी बंगलोर है जिसे आज पूरे देश में भारत के विज्ञान नगर के रूप में मान्यता प्राप्त है! इसे इलेक्ट्रॉनिक नगर भी कहा जाता है, क्योंकि देश के अधिकांश बड़े-बड़े इलेक्ट्रॉनिक उद्योग यहीं हैं! यह सबसे तीव्र गति से विकास करनेवाला नगर है।

राजकुमारी जूही

कावेरी नदी की धारा पश्चिमी घाट की एक पहाड़ी के एक छोटे झरने से आरम्भ होती है और जंगलों, हरे-भरे खेतों तथा उद्यानों से परिपूर्ण समतल भूमि से होकर बहती है जहाँ जूही, गुलाब तथा अन्य सुन्दर फूल खिलते हैं। बहुत समय पहले उस क्षेत्र में एक राजा राज्य करता था। वह सारा राज्य कभी साँपों से ग्रस्त

था और लोग बहुत कष्ट में थे। राजा किंकर्त्तव्यविमूढ़ था और समझ नहीं पा रहा था कि क्या करें। उसका एक सुंदर और योग्य पुत्र था जिसने इस समस्या का समाधान ढूँढ़ने का दायित्व अपने ऊपर लेने का प्रस्ताव रखा। वह साँपों को ढूँढ़-ढूँढ़ कर मारने के लिए जंगल की ओर चल पड़ा।

एक दिन साँपों के शिकार के बाद थका-मांदा राजकुमार एक विशाल वृक्ष के नीचे सो रहा था। उसके सेवक उसकी निगरानी कर रहे थे।

तभी सात फनों का एक बहुत बड़ा सर्प वृक्ष से नीचे उतरकर राजकुमार की ओर बढ़ने लगा। सेवकों ने अपनी तलवारें निकाल लीं। तभी राजकुमार की आँख खुल गई और उसकी नज़र साँप की पीली आँखों पर पड़ी। वह ज़ोर से चिल्लाकर बोला, ''रुक जाओ, इस उदार प्राणी को न मारो। इसकी आँखों में वेदना भरी है और यह हमें कुछ कहना चाहता है।''

तब वह सर्प की ओर मुड़ा और मधुर स्वर में बोला, ''तुम्हारे लिए मैं क्या कर सकता हूँ, ओ उदार सर्प?''

मनुष्य की बोली में सर्प के संबोधन को सुनकर उसे किसी प्रकार आश्चर्य नहीं हुआ।

''राजकुमार,'' उसने कहा, ''सात वर्षों से मुझे दंश की तरह कष्टदायक सिरदर्द है। इस पर किसी दवा का असर नहीं हो रहा है। पीड़ा इतनी है कि इस राज्य में सर्पों को नियंत्रित नहीं कर पा रहा हूँ। मैं उनका राजा हूँ। क्या तुम मेरी सहायता नहीं करोगे?''

''बताओ, मुझे क्या करना चाहिए?'' राजकुमार ने कहा।

''तुम्हारे राज्य से ७ योजन (एक योजन में ४ कोस या ८ मील) दक्षिण एक दूसरा राज्य है। वहाँ के राजा की एक कमनीय और कोमल पुत्री है जो वजनमें मुश्किल से ७ जूही फूलों के बराबर है। राजकुमारी जूही अपने जीवन में कभी नहीं हँसी। जब भी वह हँसेगी तो उसके मुख से तीन जूही के फूल झरेंगे। दूसरे फूल को सूँघने पर मेरा सिर दर्द दूर हो जायेगा। तब मैं इस बात का ध्यान रखूँगा कि मेरी प्रजा तुम्हारे राज्य को कष्ट न पहुँचाये। क्या तुम मेरे लिए वह फूल ला दोगे?''

राजकुमार ने तुरंत कहा कि मैं राजकुमारी जूही

इतिहास

कर्नाटक का वर्णन इतिहास में लगभग ३०० बी.सी. पूर्व चन्द्रगुप्त मौर्य के समय से मिलता है। चन्द्रगुप्त मौर्य ने राज्य त्याग कर जैन धर्म स्वीकार कर लिया और कर्नाटक के श्रवणाबेलागोला में एकान्तवास किया। कई शताब्दियों के बाद श्रवणाबेलागोला में गोमातेश्वर की १७ फुट ऊँची प्रतिमा बनाई गई।

से मिलने और उसे हँसाने की कोशिश करूँगा। और अपने माता-पिता को सन्देश भेजकर दक्षिण के राज्य की ओर रवाना हो गया। कुछ दूर जाने पर उसे स्वच्छ जल की एक बड़ी झील मिली। जैसे ही वह अपनी प्यास बुझाने के लिए झुका तो उसने चींटियों का पूरा घोंसला पानी में गिरा हुआ देखा। ''आह ! ये बेचारे...'' उसके मुँह से अनायास यह निकल पड़ा और उसने तुरंत अपनी पगड़ी खोलकर चींटियों के घोंसले को पानी से बाहर निकाल किनारे पर रख दिया।

''धन्यवाद राजकुमार !'' चींटियों ने मंद समवेत स्वर में कहा। ''जब कभी हमारी आवश्यकता हो तो हमें याद करना। हम तुम्हारी सहायता के लिए आ जायेंगे।''

जैसे ही राजकुमार घने जंगल की ओर बढ़ा तो उसने एक प्रकार की दबी आवाज सुनी। जब कुछ और आगे बढ़ा तो उसने देखा कि एक राक्षस एक बड़े इमली वृक्ष से धरती पर दबा हुआ है। यह स्पष्ट लग रहा था कि जब राक्षस मुँह खोलकर सो रहा था तो एक कौए ने उसके मुँह में इमली का बीज डाल दिया था।

जब उसकी नींद टूटी तो वह बीज बहुत बड़ा वृक्ष बन चुका था और उसकी जड़ें शरीर में घुस चुकी थीं। बेचारा राक्षस उठने में असमर्थ था, इसीलिए वह दबी आवाज में कराह और पुकार रहा था। राजकुमार ने अपनी तेज तलवार से जड़ों को काट दिया और राक्षस को उठने में मदद की। राक्षस ने कृतज्ञता प्रकट की।

''यदि तुम न आते तो पता नहीं मेरा क्या हाल होता? यदि कभी कष्ट हो तो मुझे याद करना। मैं फौरन आकर तुम्हारी सहायता करूँगा।'' उसने कहा।

शीघ्र ही राजकुमार बिना और साहसिक कार्य किये उस राज्य की सीमा पर पहुँच गया जहाँ उसे जाना था। वहाँ उसने अपना शिविर लगा दिया और राजा को यह सन्देश भेजा कि मैं उत्तर राज्य का राजकुमार हूँ और राजकुमारी जूही का हाथ माँगने आया हूँ। राजा यह जानकर कि एक सुन्दर और योग्य राजकुमार उसकी बेटी से विवाह करने आया है, बहुत प्रसन्न हुआ। वह राजकुमार का स्वागत करने और महल में अपने साथ ले आने के लिए नगर की सीमा पर गया।

''तुम मेरी बेटी के योग्य राजकुमार के समान तो दिखते हो, किन्तु हमारे कुल की परम्परा के अनुसार तुम्हें मेरी बेटी का हाथ लेने से पूर्व तीन कार्य पूरे करने होंगे। वे बस तीन छोटे कार्य हैं।'' राजा ने राजकुमार से कहा।

सुन्दर और योग्य राजकुमार कभी किसी चुनौती से पीछे नहीं हटता था। इसलिए उसने पूछा कि वे तीन कार्य क्या हैं।

''हाँ, तो सुनो, पहले तुम्हें हमारे गोदाम में पड़े चावल और उड़द दाल के मिश्रित ढेर को एक रात में अलग-अलग करना है। इसे पूरा करने के बाद अगला कार्य बताऊँगा।''

राजकुमार गोदाम में गया। उसने एक विशाल ढेर को देखा जो छत को छूता था। जब वह

पेड़-पौधे

कर्नाटक कॉफी के लिए प्रसिद्ध है, जिसकी खेती कुर्ग और चिकमगलूर में होती है। शिमोगा संसार भर में सर्वश्रेष्ठ सुपारी का मुख्य उत्पादक है।

कर्नाटक अनेक सुगन्धित फूलों और वृक्षों के लिए प्रसिद्ध है। जैसे- पीत चम्पक अथवा सैम्पीजे, चमेली (मैलिज), कटहल और चन्दन

मलनाड के जंगल में इलायची और काली मिर्च बहुतायत में पैदा होते हैं।

यह सोचकर चकित था कि क्या करें, तभी उसे चींटियों की याद आई। उन्हें याद करते ही उनकी सेना वहाँ पहुँच गई। कुछ सुनने से पहले ही उन सबने चावल और उड़द को अलग-अलग करना शुरू कर दिया। आधी रात के पहले ही चावल और उड़द के दो साफ ढेर गोदाम में खड़े हो गये।

अगले दिन प्रातः राजा यह देखने आया कि राजकुमार कैसा कर रहा है। उसे यह देखकर आश्चर्य और प्रसन्नता हुई कि कार्य पूरा हो गया है। "बहुत अच्छा," राजा ने कहा। "अब तुम्हें १०० पल्ला चावल (उबला हुआ) १०० माप के मट्ठे के साथ खाना है।"

इस बार उसे राक्षस की याद आई। याद करते ही वह झट प्रकट हो गया और सारा चावल खाकर सारा मट्ठा पी गया। फिर चटकार भरते और मुस्कुराते हुए उठा। वह राजकुमार के किसी काम आ सका, इसलिए वह बहुत प्रसन्न था।

अगला कार्य एक सुवर्ण घंटा बजाना था जिसकी आवाज उस पहाड़ी के चारों ओर के सातों राज्यों में सुनाई पड़ सके, जिस पर वह रखा हुआ था। राजकुमार पहाड़ी के शिखर पर जाकर खड़ा हो गया और एक बार फिर राक्षस को याद किया। वह तुरंत प्रकट हो गया और बोला, "अब क्या करना है?"

राजकुमार ने कहा, "ओ अच्छे राक्षस ! क्या इस घंटे को जोर से बजा सकते हो?"

राक्षस ने तुरंत रस्सी खींचकर घंटा बजा दिया। इसकी आवाज सातों राज्यों में सुनाई पड़ी। निस्सन्देह, राजा ने भी घंटे की आवाज सुनी और शीघ्र ही शानदार विवाह का इन्तजाम कर दिया गया। विवाह के पश्चात उपहारों के साथ एक शानदार शोभायात्रा के आगे-आगे राजकुमार और राजकुमारी जूही अपने राज्य की ओर चल पड़े।

मार्ग में वे एक गाँव के मेले से होकर गुजरे जिसमें कुछ कलाबाज अपने प्रशिक्षित बन्दरों का तमाशा दिखा रहे थे।

"यह क्या है?" राजकुमारी ने पूछा जिसका वजन सात जूही फूलों के बराबर था। उसका पालन-पोषण कोमल पुष्प के समान किया गया

कला और हस्तशिल्प

सोरब के गुडीगराज, सागर और कुमटा क्षेत्र चन्दन और हाथी के दाँतों पर जटिल नक्काशी के लिए प्रसिद्ध हैं। कर्नाटक के प्रसिद्ध हस्तशिल्प हैं - चन्दन की नक्काशी, शीशम पर जड़ाऊ काम, बिद्रीवेयर, रोगन, टेराकोटा तथा इन्नसाज़ी। रेशम उद्योग के लिए भी यह राज्य प्रसिद्ध है।

पर्यटन स्थल

कर्नाटक पर्यटकों का स्वर्ग है। यह दोनों प्राकृतिक सौंदर्य और उत्कृष्ट मानव-कृतियों में समृद्ध है। बान्दीपुर और नागरहोले के दो वन्य जीवन अभयारण्यों में प्रचुर मात्रा में हाथी, गवल, बोदा और लंगूर पाये जाते हैं। शरवती नदी से जोग में एक भव्य जलप्रपात बनता है। मैसूर नगर मनोहारी वृन्दावन उद्यान तथा स्वर्गीय महल के लिए प्रसिद्ध है। दर्शनीय ऐतिहासिक स्थलों में मुख्य हैं - बेलारी और चित्रदुर्ग के पहाड़ी क़िले, बदामी और ऐहोल के गुफा-मंदिर, हलेबिड और बेलूर के मंदिर, गोमातेश्वर की एकाश्म प्रतिमा, चमुण्डी का ग्रेनाइट बृषभ, हम्पी के भग्नावशेष, होयसाला के मंदिर और बीजापुर का गोल गुम्बज।

था और अपने जीवन में कभी उसने ऐसी चीज़ नहीं देखी थी।

''आओ और देखो,'' रथ से उतरते हुए राजकुमार ने कहा और राजकुमारी को वहाँ ले गया जहाँ सड़क के किनारे तमाशा हो रहा था।

राजकुमारी जूही बन्दरों के करतब देखकर बहुत प्रसन्न हुई और वह, जो अब तक कभी नहीं हँसी थी, ठठाकर हँस पड़ी। उसके हँसते ही उसके मुँह से तीन जूही फूल झर पड़े। राजकुमार ने उन्हें उठा लिया और बीच वाले फूल को सावधानी से अपनी पगड़ी में छिपा लिया।

अपने महल जाते समय मार्ग में राजकुमार उस वृक्ष के निकट रुका जहाँ वह सर्पराज से मिला था और उसे जूही फूल दिया। सर्पराज ने उसे सूँघा और तुरंत आराम महसूस किया। उसने राजकुमार को भेंट में एक रत्न दिया और कहा, ''यदि कभी मेरी आवश्यकता महसूस करो तो इस रत्न में देख लेना।''

इस प्रकार सुंदर और योग्य राजकुमार को अपनी पत्नी और जंगल में अनेक मित्र मिले जो आवश्यकता पड़ने पर उसकी सहायता करने आये। उसके पिता और राजा बहुत प्रसन्न हुए और राजकुमार की वापसी के उपलक्ष्य में उन्होंने बहुत शानदार भोज दिया।

समाचार झलक

अन्तरिक्ष यात्रा के लिए टिकट

यह लगभग तय है कि दूसरा पर्यटक अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (ISS) की यात्रा अप्रैल में करेगा। दक्षिण अफ्रिका का शक्तिशाली उद्योगपति मार्क शट्लवर्थ अपनी अंतरिक्ष यात्रा के लिए २ करोड़ अमरीकी डॉलर अदा कर चुका है। अमरीकी अंतरिक्ष एजेन्सी नासा (NASA) ने, जो एक वर्ष पूर्व अमेरिका के डेनिस टीटो की अंतरिक्ष यात्रा से बहुत खुश नहीं था, अब २८ वर्षीय शट्ल वर्थ को आवश्यक प्रशिक्षण देने के लिए स्वेच्छा से अपनी सेवाएँ अर्पित की हैं। रूसी राकेट में बैठने से पूर्व वह रूस में भी प्रशिक्षण लेगा। इसी बीच ब्रिटेन ने अंतरिक्ष पर्यटन में रुचि रखनेवालों के लिए 'विसा' अधिनियम जारी किये हैं। मदिरा, सिगरेट और ड्रग्स के व्यसनी व्यक्तियों को विसा के लिए योग्य नहीं माना जायेगा। डॉक्टरी जाँच जरूरी होगा और अंग्रेजी का अच्छा ज्ञान भी।

मंगलवासियों के लिए संगीत

जब मंगल पर जानेवाला अंतरिक्ष मिशन बीगल-२ तेईस दिसम्बर २००३ को लाल ग्रह पर उतरेगा, तब उपग्रह ब्रिटिश पॉप बैंड, ब्लर द्वारा रचित संगीत विकीर्ण करेगा। प्रशंसकों ने सदा बैंड के संगीत को कुछ 'इस दुनिया से बाहर' बताया है। ग्रुप ने अब इस प्रशंसा को अक्षरशः इस दुनिया से बाहर ले जाने का निर्णय लिया है। ब्लर ने "बीगल हैज लैंडेड" नाम की संगीत रचना की है जिसे मंगलवासी और धरती के पुत्र एक साथ सुनेंगे।

विघ्नेश्वर

पुत्र गणपति की चिल्लाहट सुनकर पार्वती तेज़ी से वहाँ आयीं। कटे सिर को देखकर उसने शिव को क्रोध-भरी दृष्टि से देखा और कहा, ''क्या कर दिया आपने? हमारे पुत्र का वध कर दिया आपने! पुत्र के हत्यारे हैं आप!'' वे भूमि पर बैठ गयीं और जार-जार रोने लगीं।

इस घटना से स्तब्ध लोग एकदम सचेत हो गये। वे शिव को एकटक देखने लगे मानों उनसे बड़ा अपराध हो गया हो। शिव पसीने से तरबतर हो गये। उन्होंने धीमे स्वर में पूछा, ''हमारा पुत्र! क्या कह रही हो? मैं तो यह जानता भी नहीं कि हमारा भी एक पुत्र है! यह कैसे आ गया? कहाँ से आ गया?''

पार्वती ने पूरा विवरण देते हुए बताया कि इस पुत्र गणपति का कैसे जन्म हुआ। इस पर शिव ने अपनी असहमति व्यक्त करते हुए कहा, ''हो सकता है, इसे तुमने अपना पुत्र बना लिया हो। इसने तो माँ, माँ की रट लगाते हुए बहुत कुछ बक दिया। इसे हमारा पुत्र, हमारा पुत्र कहते हुए तुम भी थक नहीं रही हो। लेकिन यह भला मेरा पुत्र कैसे हो सकता है?''

पार्वती निश्चेष्ट रह गयीं। तब विष्णु ने ब्रह्मा को इशारा किया। ब्रह्मा आगे आकर बोले, ''शिव जी ने जब पार्वती के हाथ को अपने हाथ में लिया, तभी शिव का तेज पार्वती के पूरे शरीर में व्याप्त हो गया और उसे पुलकित कर दिया। तबसे लेकर शिव, पार्वती का अर्धभाग बनकर अंतरनिविष्ट रहते आये हैं। पुत्र गणपति शिव के ही पुत्र हैं।''

ब्रह्मा ने ज़ोर देकर यह बात कही।

शिव हाथ मलते रहे और पार्वती बालक के मृत शरीर पर गिरकर रोती रहीं। तब आकाशवाणी प्रति ध्वनित हुई, ''उत्तरी दिशा की ओर सिर रखे जो निद्रावस्था में है, उसका सिर ले आइये और मेरे धड़ से उसे जोड़ दीजिये। मैं जीवित हो जाऊँगा।'' पुत्र गणपति के मुँह से निकली ये बातें सबने सुनीं।

तत्क्षण देवता व प्रमथ उत्तर दिशा की ओर सिर रखकर सोनेवाले को ढूँढ़ने निकल पड़े। उन्होंने बहुत ढूँढ़ा, लेकिन ऐसा कोई नहीं मिला, जो उत्तर दिशा की ओर सिर रखे सो रहा हो।

परंतु उन्होंने हार नहीं मानी। वे ढूँढ़ते हुए आगे गये। तब जाकर उन्होंने सह्याद्रि पर्वत पर के बिल्व वन में हाथी के एक बच्चे को देखा, जो उत्तर दिशा की ओर सिर रखे सो रहा था। निद्रा में भी वह शिव का स्मरण किये जा रहा था।

हाथी का यह बच्चा देवलोक के देवता गज ऐरावत का पुत्र गजेंद्र था। ऐरावत इंद्र का वाहन है। एक बार जब इंद्र उधर से गुज़र रहा था, तब उसकी परवाह किये बिना वह ध्यान में मग्न था। इंद्र नाराज़ हो उठा और बोला, ''मेरे वाहन के बेटे को इतना घमंड।'' उसने जी भरके उसे गालियाँ दीं।

तब गजेंद्र ने शांत स्वर में कहा, ''मेरे पिताश्री अपना कर्तव्य निभा रहे हैं। मुझे आपसे डरने की कोई ज़रूरत नहीं।''

''अरे हाथी के बच्चे ! जानते हो मैं देवेंद्र हूँ,'' इंद्र गर्व भरे स्वर में चिल्ला पड़ा।

''हाँ, मैं हाथी का बच्चा हूँ। गजेंद्र हूँ। कोई नागेंद्र है तो कोई पक्षीन्द्र है। ऐसे कितने ही इंद्र हो सकते हैं। सौ यज्ञ करने मात्र से कोई भी इंद्र का पद पाने का हक़दार बनता है। तपस्या से कुछ भी साधा जा सकता है। इसीलिए कोई कहीं कुछ कर रहा हो तो तुम्हें भय लगा रहता है। इंद्रत्व क्या इतना महान है, जिसपर तुम इठला रहे हो?'' गजेंद्र ने तैश में आकर कह दिया।

इंद्र ने क्रोधित होकर शाप दे दिया, ''तेरा सर कट जाए।'' इसपर गजेंद्र ने हँसते हुए कहा, ''शिव की आज्ञा के बिना पत्ता भी नहीं हिलता। किसे मालूम कि उसी सिर के सम्मुख तुम्हें अपना सिर झुकाना पड़े।''

इंद्र यह जान नहीं पाया कि गजेंद्र महान ज्ञानी

है। गर्व में चूर इंद्र ने कह दिया, "हाँ, हाँ, उसी शिव पर विश्वास रखो। जाओ और भूमि पर गिर पड़ो।" कहते हुए उसने गजेंद्र को पृथ्वी पर ढकेल दिया। गजेंद्र सह्य पर्वत पर जा गिरा और सदा शिव का स्मरण करता रहा। उत्तर दिशा में शिव का निवास-स्थल है। इसीलिए उसी ओर अपना मुख किये वह सोता रहा।

देवता गजेंद्र का सिर ले गये। जैसे ही वह सिर बालक के धड़ से जोड़ दिया गया, पुत्र गणपति हाथी का मुख लिये प्रकट हुए। उनके मुख पर प्रसन्नता विराजमान थी।

"मेरे लाड़ले का यह मुख ! मुझसे देखा नहीं जाता।" कहती हुई पार्वती ने अपनी आँखें बंद कर लीं।

तब गजमुखी ने मधुर स्वर में कहा, "माँ, क्यों दुखी होती हो? जो होना था, निर्विघ्न हो चुका। उस दिन आपने दीवार पर हाथी का चित्र देखा था। याद आया? मैं वही हाथी हूँ, विघ्नेश्वर हूँ।"

पार्वती को पल भर में वह दृश्य याद आ गया। शिव को भी वह घटना याद आयी।

"विघ्नेश्वर, वह तुम हो, हमारा पुत्र बनकर जन्मे हो ! क्या इसीलिए तुमने मुझे भड़काया, मुझे क्रोधित किया ! अब मैं सब कुछ समझ गया। तेरी लीला अद्‌भुत है," शिव ने कहा।

"ऐसा नहीं करूँगा तो आपने जो वचन गजासुर को दिये, वे कैसे पूरे होंगे?" यों कहकर विघ्नेश्वर ने उन वचनों की याद दिलायी।

शिव ने हर्ष प्रकट करते हुए कहा, "अच्छा

हुआ, तुमने उन वचनों की याद दिलायी। उस वचन के अनुसार मुझे तो गजचर्म पहनना चाहिए।" फिर उन्होंने गजचर्म मंगवाया और पहन लिया।

शिव विघ्नेश्वर के सम्मुख सिर झुकाते हुए बोले, "विघ्नेश्वर, अपना विश्वरूप तो दिखाओ।"

तब विघ्नेश्वर आकाश तक फैले। अब उनके पाँच सिर थे। भूमि, जल, अग्नि, वायु, आकाश नामक पंच भूतों के रंगों से उनके पाँचों सिर देदीप्यमान थे। इन पंच भूतों के रंग थे - हरा, मेघरंग, लाल, सफ़ेद व नील। उन सिरों पर नक्षत्र पुष्पों की तरह शोभायमान थे। विघ्नेश्वर की गोल तोंद झिलमिलाते हुए आकाश जैसा था। उनके अनेक हाथों में थे- अंकुश, परशु, पाश,

कलश और इनके साथ-साथ थे, त्रिमूर्तियों के शंख, चक्र, गदा, त्रिशूल, बज्रायुध। साथ ही थे- जपमाला, कमंडल, वीणा, खड्ग, शक्ति, भाला आदि। सिर ऊपर किये उनका रूप जो देख रहे थे, उनसे वह कांतिपुंज देखा नहीं गया और उन सबने अपनी आँखें नीचे कर लीं। सबमें अनिर्वचनीय आनंद भर गया। सरस्वती ने वीणा उठायी और विघ्नेश्वर का प्रिय राग हंसध्वनि झंकृत किया। नारद ने मायामालव राग का बीच-बीच में आलापन किया। शिव ने आनंद तांडव किया।

इंद्र सहित तीन करोड़ देवी-देवताओं ने विघ्नेश्वर को सिर झुकाकर प्रणाम किया। तब इंद्र के कानों में गजेंद्र की कही बातें गूंज उठीं, "इस सिर के सम्मुख तुम्हें शायद अपना सिर झुकाना पड़े।" उसे ज्ञात था कि पुत्र गणपति के धड से जो सिर जोड़ा गया है, वह गजेंद्र का ही है। इंद्र ने अब अपने कान पकड़ लिये और तीन बार उठक-बैठक लगायी, फिर साष्टांग नमस्कार करते हुए कहा, "गजेंद्र, आप ज्ञानी हैं, मैं अज्ञानी हूँ। मुझे और मेरे गर्व को क्षमा कर देना।" देवताओं ने भी ऐसा ही किया।

विश्वरूप धारण करनेवाले विघ्नेश्वर को संबोधित करते हुए शिव ने कहा, "विघ्नेश्वर, हमें लगता है कि तुम्हारे रूप के कितने ही विशेषार्थ हैं। यह जानने के लिए हम बहुत ही उत्सुक हैं।"

विघ्नेश्वर ने गंभीर स्वर में कहा, "शिवभक्तों का सम्मेलन ही यह विश्व है। मैं तो विश्व जननी जनक पार्वती शिव का पुत्र मात्र हूँ। सविनय मैं उन्हें हाथ जोड़कर नमस्कार करता हूँ।" कहते हुए उसने हाथ जोड़कर नमस्कार किया।

ब्रह्मा ने आगे बढ़कर कहा, "मत्स्यावतार लेकर विष्णु ने सोमकासुर का संहार किया और वेदों की रक्षा की। पूर्ण चंद्रमा की कांतियों को बिखेरते हुए विघ्नेश्वर प्रकट हुए और उन्हें मेरे सुपुर्द किया। मुझे ज्ञान प्राप्त हुआ। तभी विघ्नेश्वर की कितनी ही विशेषताओं से मैं परिचित हुआ। विघ्नेश्वर संकल्प सिद्धि के मूल हैं। उन्हीं का ध्यान करते हुए मैंने सक्रम रूप से सृष्टि रची।

"विघ्नेश्वर विराट स्वरूप हैं। वे सर्वत्र व्याप्त रहते हैं, इसीलिए वे 'विष्णु' कहलाये। आकाश, वायु, अग्नि, जल, मिट्टी नामक पंच भूतगणों के वे अधिपति हैं, इसी कारण विघ्नेश्वर

महागणाधिपति कहलाये गये। विश्वरूप विघ्नेश्वर के बीचों बीच लक्ष्मी सरस्वती विराजमान हैं। ऐसे विघ्नेश्वर के पाँचों सिरों पर श्वेतनील, लाल, बैंगनी, श्यामनील, हरा रंग जो लहरा रहे हैं, वे पंचमहाभूतों के प्रतिरूप हैं।

''हाथी का सिर बल व मेधाशक्ति का चिन्ह है। तोंद का होना मात्र पर्याप्त नहीं है, आवश्यक बौद्धिक क्षमता का होना भी इसका अर्थ है। लंबोदर इस बात को याद दिलाता है कि अनंत आकाश में नक्षत्र मंडल, ग्रह, उपग्रह, लोक भरे पड़े हैं। ये बहुत ही जल्दी छोटे-से चूहे पर सवार होकर चक्कर काटनेवाले हैं। इसका यह मतलब हुआ कि सूर्य, चंद्र आदि ग्रह और महामंडल शून्य आकाश में बिना चूके बड़े ही नैपुण्य के साथ घूम-फिर रहे हैं, जैसे छोटे-से चूहे पर सवार विघ्नेश्वर की यात्रा भी विचित्र विज्ञान से भरी हुई है। विघ्नेश्वर विश्व विज्ञान के संकेत हैं, इसीलिए वे विज्ञानेश्वर कहलाते हैं।

''विश्व के अधिनेता, नियंता अंकुशधारी हैं। विघ्नेश्वर बुद्धिबल की पहचान हैं। जिस प्रकार महावत अपने हाथी को नियंत्रण में रखता है उसी प्रकार नियंत्रण रखनेवाला अंकुश है मनोनिग्रह का प्रतीक। विघ्नेश्वर के हाथ में जो पाश है, वह यह कहता है कि सभी अपने-अपने धर्मों से बंधे हुए हैं। परिपूर्णता पूर्ण रूप से भरे हुए गागर के समान है इसीलिए उन्होंने कलश धारण किया। परशु विघ्नों को छिन्न-भिन्न कर देता है। विश्व नादात्मक है। ओंकार के अनेक झंकारों को ध्वनित करनेवाली विश्ववीणा की तंत्रियों को विघ्नेश्वर ही झंकृत कर रहे हैं।

चराचर करोड़ों प्राणियों की फ़रियादें सुनने के लिए ही उनके इतने बड़े-बड़े कान हैं। हाथी की आँखें छोटी होती हैं पर वे सूक्ष्मदर्शी होती हैं, सब कुछ स्पष्ट देख सकती हैं। उसी प्रकार विघ्नेश्वर भी परमाणु से लेकर ब्रह्मांड तक का परिशीलन करते हैं। टेढ़ी सूँड वक्रता को काट-काटकर सही करती है। सूँड लंबी होकर किसी को भी छू पाती है, देती है।

''समस्त समृद्धि के अधिनाथ हैं, विघ्नेश्वर। वे भोजन प्रिय हैं। आहार से ही शरीर में बल आता है। हृष्ट-पुष्ट होने पर ही बुद्धिबल भी संभव है। इसी कारण फल, पकवान व शाकाहार वे सहर्ष स्वीकार करते हैं। भाद्रपद मास में ये हाथी जैसे मेघ से सूँड जैसे आकार की वर्षा की धाराएँ बरसाते हैं। मेघगणों के नाथ हैं गणनाथ। विघ्नेश्वर अवतरित हुए इस भाद्रपद मास में ही। भाद्रपद शुक्लचौथ के दिन विघ्नेश्वर की जो पूजा करते हैं, उन्हें संकल्पसिद्धि प्राप्त होती है। सब विघ्नों का सामना करने की शक्ति, मनोधैर्य उन्हें प्राप्त होता है।

''विघ्नेश्वर के हाथों से ही पंचमवेद कहलाने के योग्य महाभारत ग्रंथ लिपिबद्ध हुआ, चिरस्थायी हुआ। विघ्नेश्वर की महिमाओं का वर्णन किसी के बस की बात नहीं है। किसी भी कार्य को प्रारंभ करने के पहले इनका ध्यान किया जाता है, इनकी पूजा की जाती है। तभी वह शुभ होता है। यही अभय मुद्रा लिये हुए ये दिखते हैं। महागणाधिपति सबके आराध्यदेव हैं।'' यों ब्रह्मा ने समाप्त किया। तब शिव ने एक बार सबको देखा और कहा, ''ब्रह्मा के शब्द आपने सुने? विघ्नेश्वर प्रथम पूजा के योग्य भगवान हैं।''

सबने ''हाँ, हाँ'' कहते हुए सिर हिलाये। नारद वीणा पर हंसध्वनि राग को झंकृत करने लगे। सरस्वती हंसानंदि राग का आलाप करने लगीं। इस समारोह में जब पार्वती विघ्नेश्वर को प्रणाम करने जा रही थीं तो विश्व रूप महागणाधिपति ने उन्हें रोकते हुए कहा, ''माते, नहीं, नहीं, ऐसा मत कीजिए।'' फिर तुरंत उन्होंने अपने विश्वरूप का उपसंहार किया और नन्हा विनायक बनकर माता पार्वती के चरणों में लिपट गये।

मानव धर्म

विष्णुपुर गाँव में विष्णुशर्मा नामक एक पंडित रहा करते थे। वे उस गाँव के छोटे-से गुरुकुल में ग्रामीणों के बच्चों को पढ़ाते थे। ज्ञानशर्मा उनका इकलौता पुत्र था। गणित में वह दक्ष था। इसलिए उसे राजा के आस्थान में नौकरी मिल गई और अब वह राजधानी में ही रहने लगा।

चूँकि विष्णुशर्मा अध्यापक थे, इसलिए उन्होंने अपने पूर्वजों से प्राप्त खेत को खेती करने के लिए किसान राजनाथ को सौंप दिया।

राजनाथ का एक बेटा हुआ। उसका नाम था सुबुद्धि। अपने नाम के ही अनुरूप उसने विद्याएँ सीखीं। उसकी शिक्षा भी उसी गुरुकुल में हुई।

एक दिन ज्ञानशर्मा अपने माता-पिता को देखने पत्नी व संतान समेत गाँव आया। राजा के आस्थान में चूँकि वह ऊँचे ओहदे पर था, इसलिए वह घोड़े की बग्गी में चार-पाँच सेवकों के साथ वहाँ आया। सुबुद्धि ने उसका वैभव देखा तो उसे भी लगा कि मुझे भी आस्थान में नौकरी करनी चाहिए। उसने अपने दिल की बात अपने माता-पिता से बतायी।

राजनाथ और रमादेवी बेटे की इस इच्छा को सुनकर स्तब्ध रह गये। राजनाथ ने अपने बेटे को समझाते हुए कहा, "बेटे, खेती हमारे वंश की वृत्ति है। पढ़ने की तुम्हारी उम्र है और शिक्षित होना भी आवश्यक है, इसलिए मैंने तुम्हें गुरुकुल में पढ़वाया। हर कोई नौकरी ही करना चाहता हो तो इस धरती की देखभाल कौन करेगा? अपना विचार बदलो और खेती करते हुए हमारे ही साथ इसी गाँव में रहो।

माँ रमादेवी ने भी उसे समझाते हुए कहा, "बेटे, हम तुम्हें छोड़कर कैसे रह सकते हैं? नौकरी मिल जाने पर तुम हमें छोड़कर दूर चले जाओगे। हम धरती माँ पर अटूट विश्वास रखते

- मार्कंडेय -

हैं। तुम्हारे साथ आना हमारे लिए कैसे संभव होगा?''

माता-पिता की बातें उसके मन को बदल न सकीं। उसने आधी रात को एक थैली में कपड़े रखे और अनाज बेचने पर थोड़ी-बहुत जो रक़म मिली, उसमें से एक हिस्सा लेकर वह नौकरी ढूँढ़ने निकल पड़ा।

सवेरा होते-होते वह एक गाँव की सरहद पर पहुँचा। उस समय उसी की उम्र का एक युवक ताड़ के पेड से निकाली ताड़ी को कुल्हड़ में भरकर नीचे उतरा। प्यार से उसने सुबुद्धि से पूछा, ''कहाँ जा रहे हो भाई?'' सुबुद्धि ने चिढ़ते हुए कहा, ''तुम तो ताड़ी बेचते हो, जो सात बुरी लतों में से एक है। मुझसे तुम्हें क्या काम? मैं कहीं भी जाऊँ, इससे तुम्हें क्या लेना-देना है?''

इसपर वह युवक हँसता हुआ बोला, ''मेरे हाथ में ताड़ी के इस कुल्हड़ को देखकर तुम भला क्यों इतना चिढ़ गये? कुश मेरा नाम है। मैं भी पढ़ा-लिखा हूँ। समझता था कि नौकरी करने पर सुख भोगूँगा और मेरी इज़्ज़त भी होगी। पर हर मानव की कुछ जिम्मेदारियाँ हैं। मैं इन्हें जान नहीं पाया और घर छोड़कर चला गया। मेरे लिए रो-रोकर मेरे माँ-बाप अंधे हो गये। यह जानते ही मैं घर लौट आया। अब मुझे उनकी खुशी ही चाहिए, इससे बढ़कर और कुछ नहीं चाहिए। इसी में मुझे अत्यंत आनंद प्राप्त होता है। अगर तुम्हारी आवश्यकता तुम्हारे माता-पिता को है, तो भला इसी में है कि तुम घर लौट जाओ।''

उसकी बातें सुनकर वह हतप्रभ रह गया। अपने को संभालते हुए उसने कहा, ''मानता हूँ कि तुम्हारी बातों में सच्चाई है। परंतु इच्छाएँ बाढ़ के प्रवाह की तरह हैं। अब उस प्रवाह को रोकने की मुझमें शक्ति नहीं है।''

अब सुबुद्धि को अपने माता-पिता की याद आने लगी। उसका हृदय चिंताग्रस्त हो गया। दोपहर तक वह चलता रहा, जिससे भूख उसे सताने लगी। एक गाँव के पास ही की एक झोंपड़ी में वह गया। उस झोंपड़ी के बीचों बीच अधेड़ उम्र का एक आदमी बैठा हुआ था। उसके चारों ओर जड़ी-बूटियाँ तितर-बितर पड़ी हुई थीं। वह कोई ग्रंथ ध्यानपूर्वक पढ़ रहा था।

सुबुद्धि के पैरों की आहट सुनते ही उसने सिर उठाया और उसे देखते हुए कहा, "कड़ी धूप में चलकर आये हो। कहाँ जाना है?" सुबुद्धि ने सविस्तार बताया।

अधेड़ उम्र के उस आदमी ने पूरा विषय सुनने के बाद कहा, "मेरा नाम गुरुनाथ है। मेरा अपना कोई नहीं है। जब मैं जीवन से विरक्त था तब एक सिद्ध व्यक्ति मुझे अपने साथ यहाँ ले आये। उनसे रचित वैद्य ग्रंथ के द्वारा औषधियों के बारे में और उनकी विशेषताओं का ज्ञान पा रहा हूँ। अब अंधों से संबंधित औषधि के बारे में अध्ययन कर रहा हूँ। यह उन्हीं सिद्ध का आश्रम है। सवेरे ही वे बाहर चले गये और किसी भी क्षण वे लौटेंगे।

पंद्रह मिनटों के अंदर ही सिद्ध आश्रम में लौट आये। सुबुद्धि के बारे में सविस्तार जानने के बाद उन्होंने उसके भोजन की व्यवस्था की।

फिर सिद्ध ने सुबुद्धि से कहा, "रास्ते में जिस कुश से तुम मिले, उसने तुम्हें जीवन का एक महान सत्य बताया। वह युवक कुश धन्य है, जिसने अपने माता-पिता की सेवा में अपने को समर्पित कर दिया। अपने पेशे के बड़प्पन को उसने जाना पहचाना। यह मानव धर्म है और वह उसे सही पद्धति से निभा रहा है। इसमें जो सच्चाई है, मैं उसे साबित करूँगा। चलो, हम उस युवक के घर चलें।"

सिद्ध, गुरुनाथ व सुबुद्धि तीनों उस युवक कुश के घर गये। उस समय अपने अंधे माता-पिता को वह महाभारत पढ़कर सुना रहा था।

उन तीनों का उसने सादर स्वागत किया।

सिद्ध ने कुश युवक से कहा, "माता-पिता की तुम्हारी सेवा प्रशंसनीय है। तुम्हारे बारे में सब कुछ इस सुबुद्धि के द्वारा मुझे मालूम हुआ। तुम्हारे माता-पिता के अंधेपन को दूर करने के लिए अपने साथ एक बूटी लाया हूँ। तुम तीनों पुनः उनकी दृष्टि के लिए प्रार्थना करते हुए उनकी आँखों पर इस औषधि का लेपन करो।" कहते हुए उसने पहले गुरुनाथ को वह औषधि दी।

गुरुनाथ ने पहले आँखों से उसे छूते हुए कहा, "सिद्ध गुरुवर के कहे अनुसार मैंने यह औषधि बनायी। इतने दिनों के बाद इस औषधि के प्रभाव की परीक्षा का समय आसन्न हुआ।" फिर उसने युवक के माँ-बाप से कहा, "आप देख पायेंगे तो मेरा जन्म धन्य हो जायेगा।"

बाद उसने उनकी आँखों पर उस औषधि का लेपन किया।

चार-पाँच मिनट गुज़र गये, पर उनपर उस औषधि का कोई प्रभाव नहीं हुआ। सिद्ध ने अब सुबुद्धि को यह काम सौंपा।

सुबुद्धि ने कहा, "मैं घर से चला आया हूँ। इसका यह मतलब नहीं कि मैं अपने माता-पिता से प्रेम नहीं करता। मुझे पूरा विश्वास है कि यह औषधि आप दोनों की दृष्टि वापस लायेगी।" यह कहकर उसने उस औषधि का लेपन उन दोनों की आँखों पर किया।

पर इससे भी कोई लाभ नहीं हुआ। सिद्ध ने मुस्कुराते हुए कहा, "सुनो, गुरुनाथ का अपना कोई नहीं है, फिर भी बडा बनने की उसमें महत्वाकांक्षा है, नाम कमाने की उसमें तडप है। संपन्न बनने की इच्छा से प्रेरित होकर, वैभव के पीछे पागल होकर सुबुद्धि घर से निकल आया और उसने अपने माता-पिता के मन को दुख पहुँचाया। अब देखें, यह युवक कुश अपने माता-पिता के अंधेपन को दूर करने में सफल होता है या नहीं।" यह कहते हुए उसने वह औषधि उसके हाथ में थमा दी।

कुश ने झुककर सिद्ध को नमस्कार किया और कहा, "जिन माता-पिता ने जन्म दिया, उनकी सेवा करना मैंने अपना परम धर्म माना। उन्हीं की इच्छाओं के अनुसार जीवन बिताना मेरा आदर्श है। मेरी दृष्टि में यही उत्तम मानव धर्म है। इसी में मेरा अटल विश्वास है।" कहते हुए उसने औषधि अपने माता-पिता की आँखों पर लगायी।

कुछ ही क्षणों में कुश के माता-पिता की दृष्टि लौट आयी। वे अब सब कुछ स्पष्ट देखने लगे। इस चमत्कार को देखकर सभी चकित रह गये। सुबुद्धि ने सिद्ध को प्रणाम करते हुए कहा, "जान गया हूँ कि वृद्ध माता-पिता को आनंद पहुँचाना ही सर्वोत्तम मानव धर्म है।" फिर वह विष्णुपुर लौट गया और माता-पिता के कथनानुसार जीवन बिताते हुए सुखपूर्वक रहने लगा।

मालूम - नहीं मालूम

मंगलपुरी राज्य पर मायवर्मा नामक राजा राज्य करता था। जब उसका मंत्री मर गया, तब राजा ने नये मंत्री की नियुक्ति नहीं की। वही राजा मंत्री भी बनकर राज्य करने लगा।

उसने सुना था कि राजा को जनता के सुख-दुख को खुद जान लेना चाहिए; इसलिए वह वेष बदलकर, दो अंगरक्षकों को साथ ले, जब-तब जनता के बीच घूमा करता था। लेकिन राजा बुद्धिमान और होशियार न था।

एक दिन राजा वेष बदलकर घूम रहा था कि एक घर में पति-पत्नी के बीच वाद-विवाद की बातें सुनाई दीं।

''छिः छिः यह क्या किया तुमने? अगर यह कहती कि नहीं जानती तो मैं ही कर देता।'' पति ने कहा।

''आपको क्या मालूम? कहते हैं, हर बात को मैं जानता हूँ। लेकिन मेरा छोटा शिशु जो जानता है, उतना भी आप नहीं जानते!'' पत्नी ने कहा।

''बकवास मत करो! तुम कुछ जानो, तब तो! क्या यह छोटा काम भी मैं नहीं कर सकता? तुमने मुझे क्या समझ रखा है? मौक़ा मिले तो इस राज्य पर हुकूमत करने की अक्लमंदी भी मैं रखता हूँ।'' पति ने बताया।

यह बात कानों में पड़ते ही राजा अपने कान बंदकर महल को लौट पड़ा। दूसरे ही दिन उसने एक कानून अमल किया। उस कानून के अनुसार राज्य का कोई भी व्यक्ति यह नहीं कह सकता कि मुझे सब मालूम है। अगर कोई यह कहे- 'मुझे मालूम है' तो उसे कड़ी सज़ा दी जाएगी।

इस कानून से लोगों को बडी तक़लीफ़ होने लगी। सज़ा के डर से वे हर बात का जवाब 'नहीं मालूम' देने लगे। यही उनकी आदत-सी हो गयी।

(चन्दामामा में पचीस वर्ष पूर्व प्रकाशित कहानी)

कुछ दिनों के बाद उस राज्य में दूसरे देश के दो आदमी आये। उन लोगों ने जान लिया कि किसी से कुछ पूछें तो वे ''हमें मालूम नहीं '' यही जवाब देते हैं। कुछ लोगों को इकट्ठे देख उन दोनों ने पूछा-''तुम लोग हर बात का जवाब 'नहीं मालूम' देते हो ! ऐसा क्यों?''

''नहीं मालूम जी ! हमें कुछ नहीं मालूम। आप लोग जो पूछते हैं, उनका एक भी जवाब हमें नहीं मालूम।'' यही जवाब फिर से उन लोगों ने दिया।

वे अपने मन में भुनभुनाने लगे-'' यह कैसा बुरा देश है ! किसी से जो भी पूछो, यही कहते हैं - हमें नहीं मालूम !''

जब ये सारी बातें हो रही थीं, तब राजा वहीं पर वेश बदलकर भीड़ में था। जनता की और विदेशियों की बातें भी राजा ने सुन लीं।

इसलिए राजा ने दूसरे दिन एक दूसरा कानून अमल किया, ''राज्य-भर में किसी को किसी भी हालत में 'नहीं मालूम' नहीं कहना चाहिए ! ऐसा जो कहेगा, उसे कठिन सज़ा मिलेगी।''

उस दिन से राज्य में कहीं ''मालूम'' शब्द या ''नहीं मालूम'' शब्द भी सुनाई नहीं देता था। लगता था कि जनता का मुँह सिल दिया गया है !

यह सब विदेशियों के रहते ही हुआ था। इसलिए उनका सारा काम-वाम ठप्प हो गया। वे राजा के दर्शन करने गये और उनके नाम एक पत्र भेजा। उसमें यों लिखा था -

''राजन, हमलोग दूसरे देश के यात्री हैं। आपके कानूनों ने सबके मुँह बंद कर रखे हैं। विदेशी होने के कारण ये कानून हमारे काम में

बाधा डाल रहे हैं। आपके इन कानूनों का कोई कारण ज़रूर होगा। आप वह कारण हमें बतायेंगे तो हम उस हालत को सुधार सकते हैं।''

राजा ने विदेशियों को बुलवाकर उन्हें उस दंपति की बातचीत सुनायी।

विदेशियों ने राजा की बातें सुनकर कहा- ''उस दंपति ने किस संदर्भ में ये बातें कही हैं, उसे समझ लेना ज़रूरी है।''

राजा अपना वेश बदलकर, उन विदेशियों को साथ ले उस दंपति के घर पहुँचा और घर के मालिक को बुलाकर पूछा-''तुमने कुछ दिन पहले अपनी पत्नी से कहा था कि तुम सब जानते हो, यहाँ तक कि राज्य चलाना भी जानते हो। क्या तुमको याद है!''

''मुझे अपने घर पर भी राज्य करना नहीं मालूम है। मैं कहाँ सारे राज्य को चला सकता हूँ? मैंने यह बात कानून बनने के पहले कही थी। उस दिन मेरी पत्नी ने रसोई बिगाड़ दी थी। इसलिए धमकी देते हुए उससे यह था। जो स्त्री कुछ नहीं जानती और वह बराबर यह कहती फिरे कि 'आप कुछ नहीं जानते' तो मुझे कैसा लगेगा? क्या गुस्सा नहीं आयेगा! उस जोश में मैंने भी कुछ बक दिया।'' उस आदमी ने कहा।

''सुना, महाराज! साधारण लोग यूँही कुछ कह देते हैं तो आप उसे इतना गंभीरतापूर्वक लेकर झट कानून बना देते हैं! इससे पूरे राज्य भर की प्रजा को कितनी तकलीफ़ होती है? आपको राजकाज के संबंध में सलाह देनेवाले मंत्री भी नहीं रहे क्या?'' विदेशियों ने राजा से कहा।

''मेरा पुराना मंत्री मर गया है। नये मंत्री को अभी तक मैंने नहीं चुना। तुम दोनों मेरे मंत्री बनकर क्या मदद करना चाहोगे? तुम दोनों बड़े अक्लमंद मालूम होते हो!'' राजा ने कहा।

वे दोनों मंत्री बनने को राजी हो गये और उसी के राज्य में सदा के लिए रह गये। उस दिन से राज्य के काम बिना रोक-टोक के चलने लगे और प्रजा सुखपूर्वक रहने लगी।
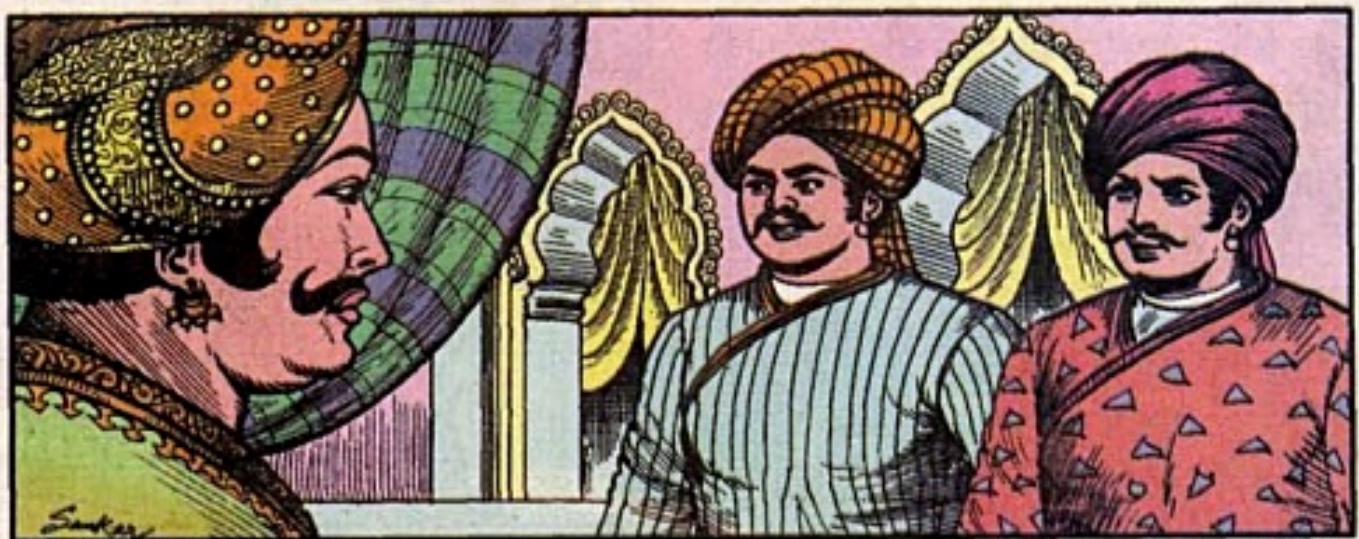
चोर दामोदर

कोसल राज्य के एक नगर में दामोदर नामक एक चोर रहा करता था। वह जवान था। चोरियाँ करने में वह बड़ा ही दक्ष था। किसी भी प्रकार के ताले को वह बडी ही आसानी से खोल देता था। बिल्ली की तरह फूंक-फूंककर वह क़दम बढाता था। कोई आवाज़ होने ही नहीं देता था। चाहे कितना भी अंधेरा क्यों न हो, वह जान जाता था कि कौनसी चीज़ कहाँ रखी हुई है। यह उसकी खासियत थी।

चोरी की कला में उसके नैपुण्य को देखकर चोरी के पेशे में लगे पिता चाहते थे कि वह उनकी बेटी से शादी करे। इसपर वह कहता था, ''राजा के खजाने को लूटना मेरा लक्ष्य है। मैंने प्रतिज्ञा की है कि जब तक यह काम नहीं करूँगा, तब तक शादी नहीं करूँगा।''

दामोदर चोरों के जिस गिरोह से मिला-हुआ था, उसमें सूरनंदन नामक एक प्रधान था। उसने अकस्मात् एक दिन सूरनंदन की बेटी गौरी को देखा। वह युवती देखने में बड़ी सुंदर थी। चोरों के गिरोह में ऐसी सुंदर लड़की आज तक उसे देखने को नहीं मिली। वह उसपर लट्टू हो गया। किसी भी हालत में उससे शादी करने का उसने निश्चय कर लिया।

वह महसूस करने लगा कि राजा के खज़ाने को लूटना इतना आसान काम नहीं है। शायद सालों लग जाएँ और वह सफल भी न हो। हो सकता है, इस बीच कोई गौरी से शादी कर ले। अब उसने इस काम में देरी करना उचित नहीं समझा। इसलिए वह गौरी के पिता से मिलने गया।

सूरनंदन पूछने ही वाला था कि किस काम पर आये हो, इतने में दामोदर ने उसे प्रणाम करते हुए कहा, ''मेरा नाम दामोदर है। यह सब जानते हैं कि चोरी की कला में मेरी बराबरी का कोई है नहीं। चोरी के अपराध में मैं आज तक पकड़ा भी नहीं गया हूँ।'' गौरी के पिता ने पूछा, ''मैं तुम्हारे बारे में सुन चुका हूँ, पर यह तो बताओ कि किस

- किशोर राठी -

काम से यहाँ आना हुआ?''

दामोदर ने हिचकिचाते हुए कहा, ''शादी करने की मेरी इच्छा है,'' कहकर वह रुक गया।

इस पर सूरनंदन ने हँसते हुए कहा, ''तुम्हारी इच्छा सही है और तुम्हारी उम्र शादी करने की भी है। क्या इस काम में तुम्हें मेरी सहायता की ज़रूरत है? लडकी पसंद कर ली है क्या? वह कौन है?''

दामोदर ने इस बार धैर्य समेटते हुए कहा, ''आपकी बेटी गौरी मुझे बहुत पसंद है। उससे शादी करने की मेरी तीव्र इच्छा है।''

इस पर सूरनंदन चकित रह गया और पूछा, ''इसका यह मतलब हुआ कि तुम मेरी बेटी गौरी को जानते हो। सुंदरता में उसकी टक्कर की कोई और लडकी है नहीं। पर तुम्हें यह बताना भी ज़रूरी है कि वह मुँहफट है पर होशियार भी। हमारी कला से उसे सख्त नफ़रत है। तुम्हें दामाद बनाने में मुझे कोई एतराज नहीं। यह रिश्ता तो मुझे बहुत पसंद भी है। पर उसकी इच्छा को भी जानना ज़रूरी है। है न?'' कहते हुए वह घर के अंदर गया और गौरी को बुला लाया।

गौरी ने पिता की कही सारी बातें सुनीं और दामोदर से कहा, ''मैंने भी सुन रखा है कि तुम चोरी करने में सिद्धहस्त हो। पर तुम्हें चोरी करते हुए मुझे खुद देखना होगा। मेरी कोई चीज़ मुझसे चुरा लो, पर इसकी जानकारी मुझे नहीं होनी चाहिए। तभी हमारी शादी हो सकती है।''

''यह तो मेरे बायें हाथ का खेल है,'' यह कहता हुआ दामोदर वहाँ से चला गया।

दो दिनों के बाद गौरी पास ही के गाँव में हो

रहे मेले में गयी। दामोदर को यह बात मालूम हुई तो वह भी अपना वेष बदल कर वहाँ गया। एक टोकरी में उसने तरह-तरह के गुडिये सजाये और उन्हें बेचने का नाटक करने लगा। गौरी तन्मय होकर मेले की विचित्रताएँ और विशेषताएँ देखने लगी। दामोदर ने दबे पाँव उसका पीछा किया। गौरी चंद्रहार पहनकर आयी थी। उसे चुराकर वह साबित करना चाहता था कि वह चोरी की कला में कितना निपुण है।

जब गौरी कुछ खरीदने के लिए झुकी तब दामोदर ने बडे ही नैपुण्य के साथ उसके गले के चंद्रहार की चोरी कर ली। काफ़ी भीड थी, इसलिए किसी को इसका पता नहीं चला।

दूसरे दिन वह सूरनंदन के घर गया और गौरी को बुलाकर कहा, ''अपने चंद्रहार के खो जाने पर तुम्हें बहुत दुख होगा। मेले में तुम्हारी जानकारी

के बिना वह चंद्रहार मैंने ही चुराया था। अब मानती हो न, मैं कितना कुशल चोर हूँ।''

''इस पर गौरी ठठाकर हँसती हुई बोली, ''मेले में तुम गुड़ियों को बेचनेवाले के वेष में आये थे। वहाँ तुमने मेरे चंद्रहार को चुरा लिया। ये सारी बातें मुझसे छिपी नहीं हैं। मैं सब कुछ जानती हूँ। तुम मामूली चोरियाँ भी करने के लायक़ नहीं हो। तुमने जिस चंद्रहार को मुझसे चुराया है, वह नक़ली है।''

उसकी बातें सुनते ही दामोदर के हाथ से चंद्रहार ज़मीन पर गिर गया और वह मुड़कर तुरंत वहाँ से चला गया।

गौरी ने दो-तीन दिनों तक उसके आने की प्रतीक्षा की। जब वह नहीं आया तो खुद उसके घर चली गयी। दामोदर खाट पर पड़ा आँख मूंदकर लेटा हुआ था। गौरी ने ज़ोर से तालियाँ बजायीं और कहा, ''सो रहे हो या राजा के खज़ाने को लूटने की योजना बना रहे हो?''

दामोदर उठ बैठा और कहा, ''राजा का खज़ाना लूटूँ और वह भी मैं। जब तुम्हारी जानकारी के बिना तुम्हारे चंद्रहार की ही चोरी नहीं कर सका तब राजा का खज़ाना कैसे लूट पाऊँगा? अब मैं मान गया हूँ कि बड़ी-बड़ी चोरियाँ करने की अक्लमंदी मुझमें नहीं है। छोटी-मोटी चोरियाँ करके मैंने अपने को बहुत बड़ा चोर मान लिया था। यह केवल मेरा भ्रम था।''

गौरी ने उसकी बातों पर खुश होकर कहा, ''चोर यदि अक़्लमंद भी हो, तब भी उसका कोई दिन ख़तरे से खाली नहीं होता। यह पेशा ही गंदा है।''

''तो अपनी जीविका के लिए मैं क्या करूँ?'' दामोदर ने दुख-भरे स्वर में पूछा। गौरी ने मुस्कुराते हुए कहा, ''यहाँ से दो कोस की दूरी पर मेरे मामाजी का गाँव है। वे किसान हैं। मेहनत करते हैं और आराम से रहते हैं। हम चोरों के इस गिरोह को छोड़ देंगे और वहाँ जाकर रहेंगे। मेहनत की कमाई से सुखी रहेंगे।'' गौरी ने कहा।

दामोदर ने क्षण भर सोचकर कहा, ''तुमने ठीक कहा। तुम्हारा कहा उपाय मुझे सही लगता है। पर क्या तुम्हारे पिता यह मान जायेंगे?''

''यहाँ आने के पहले मैंने उनसे सब कुछ बता दिया। चलो, अब चलते हैं,'' गौरी ने कहा।

अब दामोदर गौरी के साथ ससुराल जाने के लिए निकल पड़ा।

चन्दामामा प्रस्तुति
अपराजेय गरुड़
14
चित्र : पाणि
चन्द्रपुरी में यह अफवाह है कि राजा महेन्द्रवर्मा का अपहरण हो गया है। नरेन्द्रदेव को एक देववाणी से पता चला कि तांत्रिक नागबन्धु बता सकता है कि राजा को कहाँ छिपा कर रखा गया है। वह तांत्रिक से मिलने जाता है, जो, जैसा कि उसे कहा गया है, हरेक के लिए कुछ नियमों के पालन करने पर जोर डालता है।

नरेन्द्रदेव स्पष्ट रूप से क्षुब्ध है।
तुम्हारे अतिथि को हमारे स्वामी के आदेश का पालन करना होगा।
क्या उन्हें नहीं मालूम कि मैं कमान्डर हूँ? वे लोग हमें कैसे किसी चीज़ के लिए आदेश दे सकते हैं?
निस्सन्देह, वह सभी औपचारिकताओं का पालन करेगा। वह हमारे स्वामी को प्रसन्न करेगा।

नरेन्द्रदेव और दूसरों को सुनाकर देववाणी घोषणा करती है।
हमारे स्वामी केवल कुछ दिनों पर ही प्रकट होते हैं। वे अपने भक्तों से पूर्ण समर्पण और परम प्रभु के रूप में उनकी स्वीकृति की माँग करते हैं।

आज मानवता के कल्याण के लिए शुभ मुहूर्त में दो प्रभुओं का मिलन निर्दिष्ट है। यह एक महान दिवस है!
देववाणी नरेन्द्रदेव के अहंकार को हवा देने का प्रयास करती है।
मैं आपके लिए एक महान भविष्य देखता हूँ, प्रभु! राजर्षि नागबन्धु के पूर्ण समर्थन से तुम राजा हो सकते हो, यहाँ तक कि सम्राट भी!
हमारे स्वामी के आगमन की प्रतीक्षा करो। ऐसा दृश्य तुमने कभी नहीं देखा होगा। उसके आदेश की प्रतीक्षा करो।
मैं सभी आदेशों का पालन करूँगा। बताओ, अब मैं क्या करूँ?
शीघ्र ही सारा स्थान धुआं से भर जाता है। एक विस्मयकारी आकृति मंदिर के समीप आती है। उसके सिर पर दो शक्तिशाली रत्न सर्प की आँखों के समान चमकते हैं। उसकी पीठ पर एक लम्बा वस्त्र है जो सर्प चर्म के समान दिखता है।

कमर में एक धोती के अतिरिक्त शरीर के सामने का हिस्सा निर्वस्त्र है। उसके शरीर पर जड़ी-बूटियों के लेप से तीखी गन्ध आती है। उसके गले में माला के समान दो साँप लिपटे हैं। जब तांत्रिक नरेन्द्रदेव के सामने से गुजरता है तो वह रुक जाता है और भयानक रूप से हँसता है।
तुम्हारा शत्रु वर्षों से मेरा शत्रु रहा है। हमारे अनुष्ठानों में भाग लेने के लिए तुम्हारा स्वागत है।
मंदिर की ओर जाने से पहले तांत्रिक अपने एक शिष्य को बुलाता है।
आज वह हमारा अतिथि है। उसे बताओ कि क्या करना है।
जी हाँ, ऋषि महाराज!
हमारे स्वामी कहते हैं कि तुम्हें अन्य सभी लोगों के समान वस्त्र धारण करना चाहिए और अपने को प्रस्तुत...

...बिना किसी झिझक के, यदि तुम अपने लक्ष्य की पूर्ति चाहते हो।
ठीक है, मैं पोशाक बदलकर अभी आता हूँ।

जब वह वापस आता है, तब वह सम्मोहित सा लगता है। वह तांत्रिक के सामने साष्टांग दण्डवत करता है।

उठो, मेरे मित्र ! आओ, मेरे पास बैठो और भक्ति के साथ अनुष्ठान देखो।
(क्रमशः)

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,
प्लाट नं. ८२ (पु.न. ९२), डिफेन्स आफिसर्स कालोनी, इकाडुथांगल, चेन्नई - ६०० ०९७.

जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए। सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/-रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा।

बधाइयाँ

फरवरी अंक के पुरस्कार विजेता हैं :

मानस
C/o. अरविन्द
N.C. 40/7, न्यू कालोनी, मोदीपुरम - २५० ११०
मेरठ, उत्तर प्रदेश.

विजयी प्रविष्टी

जल्दी आ मेरे टेडी यार।
दीदी द्वार पर खड़ी तैयार॥

चंदामामा वार्षिक शुल्क

भारत में १२०/- रुपये डाक द्वारा

Payment in favour of CHANDAMAMA INDIA LIMITED
No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 600 026 on behalf of Chandamama India Limited, No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097. Editor : Viswam

एक साबुनदान मुफ़्त!*

मैसूर सन्दल
बेबी सोप
प्राकृतिक चन्दन
और बादाम तेल युक्त

आपके शिशु की उतनी ही देखभाल करता है, जितनी आप करती हैं।

द हाउस ऑफ मैसूर सन्दल ८० वर्षों से भी अधिक समय से चन्दन की सुगन्ध से आप के घरों को सुवासित कर रहा है।

* स्टॉक समाप्त होने तक। इसलिए शीघ्र करें।

अधिक स्वच्छता और स्वास्थ्य के लिए, मैसूर सन्दल बेबी सोप की ओर मुड़े।